लेक्चर लाहौर

इस्लाम और इस देश के अन्य धर्मों पर
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद
व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम का लेक्चर

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: लेक्चर लाहौर
Name of book	: Lecture Lahore
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग	: महवश नाज़
Typing Setting	: Mahwash Naaz
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

ٹائٹل بار اوّل

فِيْهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ

محمد است امام و چراغ ہر دو جہاں　　محمد است فروزندہ زمین وزماں
خدانگوئش ازترس حق مگر بخدا　　خدا نما ست وجودش برائے عالمیاں

इस्लाम और इस देश के दूसरे धर्मों

पर

हज़रत मुजद्दिदुलवक्त, ज़माने के इमाम, मसीह मौऊद

जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब

रईस क़ादियान का लेक्चर

जो 3 सितम्बर 1904 ई० को लाहौर के स्थान पर एक

अज़ीमुश्शान जलसे में पढ़ा गया

और जिसको

अंजुमन फ़ुर्क़ानिया लाहौर के लिए

मिंया मैराजुद्दीन उमर जनरल कन्ट्रेक्टर-व-सेकेट्री कथित

अंजुमन और हकीम शेख़ नूर मुहम्मद मुन्शी आलम मालिक

हमदम सेहत लाहौर ने

रिफाहे आम स्टीम प्रेस लाहौर में जनसामान्य के

लाभ हेतु छपवा कर प्रकाशित किया।

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

लेक्चर लाहौर

इस्लाम और इस देश के अन्य धर्म

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक लेक्चर है जो 3 सितम्बर 1904 ई. को लाहौर के एक महान जल्से में पढ़ा गया था। यह "लेक्चर लाहौर" के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस लेक्चर में हुज़ूर ने इस्लाम, हिन्दू धर्म और ईसाइयत की शिक्षा की तुलना प्रस्तुत करके इस्लामी शिक्षाओं की श्रेष्ठता सिद्ध की है।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वर्तमान युग में गुनाह की अधिकता का मूल कारण ख़ुदा की पहचान की कमी है। इस का उपचार न ईसाइयों के कफ़्फ़ारे से संभव है न वेद की वर्णित शिक्षाओं से और पूर्ण मारिफ़त जिस की प्राप्ति वास्तव में ख़ुदा तआला के वार्तालाप और संबोधन से ही संभव है तथा इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म में नहीं मिल सकती क्योंकि हिन्दुओं और ईसाइयों के नज़दीक वह्यी और इल्हाम का दरवाज़ा बंद हो चुका है।

धर्म के दो भाग होते हैं **आस्थाएं तथा कार्य**। आस्थाओं में से बुनियादी आस्था अल्लाह तआला के अस्तित्व और विशेषताओं की आस्था है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की यह बुनियादी आस्था वर्णन करके ईसाइयत द्वारा प्रस्तुत तस्लीस और वेदों की रूह और तत्त्व के अनादि एवं स्वयंभू होने की आस्था का खण्डन किया है।

कर्मों के बारे में पवित्र क़ुर्आन की आयत

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى(अन्नहल-91)

को सर्वांगपूर्ण ठहराते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने बन्दों के अधिकारों की तीन श्रेणियां वर्णन की हैं और बताया है कि यह शिक्षा अन्य धर्मों में नहीं है।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उदाहरण के तौर पर इस्लाम और ईसाइयत की क्षमा और प्रतिशोध के बारे में शिक्षाओं की तुलना करके इंजील की शिक्षाओं की परस्पर अनुचित होना सिद्ध किया है और आर्यों की आवागमन की आस्था तथा ईसाइयों की आस्था नर्क का अनश्वर होने का खण्डन करके हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस्लामी शिक्षाओं की श्रेष्ठता और इस्लाम की अच्छाइयों को अत्यन्त सुन्दर शैली में प्रस्तुत किया है।

अन्त में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने दावे उसके तर्क और अपनी भविष्यवाणियों का वर्णन किया है जो पूरी हो गईं।

आज अख़बार "पैसा अख़बार 27 अगस्त 1904 ई के पढ़ने से मुझे मालूम हुआ

कि मिर्ज़ा महमूद नामक हकीम ईरानी लाहौर में ठहरे हुए हैं। वह भी एक मसीहियत के मुद्दई के सहायक हैं। दावा करते हैं और मुझसे मुकाबले के इच्छुक हैं। मैं अफ़सोस करता हूँ कि मुझे फ़ुर्सत का इतना अभाव है कि मैं उनके इस निवेदन को स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि कल शनिवार का दिन जलसे का दिन है जिसमें मेरी व्यस्तता होगी और रविवार के दिन प्रात: मुझे गुरदासपुर में एक मुक़द्दमे के लिए जाना, जो अदालत में दायर है, आवश्यक है। मैं लगभग बारह दिन से लाहौर में ठहरा हुआ हूँ। इस अवधि में किसी ने मुझसे ऐसा निवेदन नहीं किया। अब जबकि मैं जाने को हूँ और एक मिनट भी मुझे किसी अन्य कार्य के लिए फ़ुर्सत नहीं तो मैं नहीं समझ सकता कि इस बे वक्त के निवेदन से क्या मतलब और क्या उद्देश्य है, परन्तु फिर भी मैं हकीम महमूद अहमद साहिब को फैसले के लिए एक और साफ़ मार्ग बताता हूँ और वह यह है कि कल 3 सितम्बर को जलसे में मेरा निबंध पढ़ा जाएगा वह निबंध एडिटर साहिब पैसा अख़बार अपने पर्चे में पूर्ण रूप से प्रकाशित कर दें, कथित हकीम साहिब से निवेदन करता हूँ कि वह इस निबंध के मुकाबले में इसी अख़बार में अपना निबंध प्रकाशित करा दें और फिर जनता स्वयं इन दोनों निबंधों को पढ़ कर फैसला कर लेगी कि किस व्यक्ति का निबंध ईमानदारी पर और सच्चाई और शक्तिशाली तर्कों पर आधारित है और जिस व्यक्ति का निबन्ध इस स्तर से गिरा हुआ है मेरी समझ में फैसले का यह तरीका उन बुरे परिणामों से बहुत सुरक्षित होगा जो

आजकल अधिक मुबाहसों से अनुमानित है अपितु चूँकि इस शैली में कलाम का लक्ष्य हकीम साहिब की ओर नहीं और न उनके बारे में कोई चर्चा है। इसलिए ऐसा निबंध उन मनमुटावों से भी श्रेष्ठतर होगा जो परस्पर मुबाहसों से कभी-कभी सामने आ जाया करते हैं।

वस्सलाम - इसी से

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

प्रथम★ मैं उस ख़ुदा का धन्यवाद करता हूं जिसने ऐसी शान्तिपूर्ण सरकार की छत्र-छाया में हमें स्थान दिया है जो हमें अपने धार्मिक प्रसार से नहीं रोकती और अपने इन्साफ एवं न्याय से हमारे मार्ग का प्रत्येक काँटा दूर करती है। अत: हम ख़ुदा के धन्यवाद के साथ इस सरकार का भी धन्यवाद करते हैं।

तत्पश्चात हे सम्माननीय श्रोताओ! इस समय मैं उन धर्मों के बारे में जो इस देश में पाए जाते हैं कुछ वर्णन करना चाहता हूं और जहां तक मुझ में शक्ति है मैं सभ्यतापूर्वक बात करूंगा तथापि मैं जानता हूं कि स्वाभाविक तौर पर कुछ लोगों को उन सच्चाइयों का सुनना अप्रिय लगता है जो उन की आस्था और धर्म की विरोधी हैं। अत: यह बात मेरे अधिकार से बाहर है कि इस स्वाभाविक नफ़रत को दूर कर सकूँ। बहारहाल मैं सच्चाई को वर्णन करने में भी प्रत्येक सज्जन से क्षमा चाहता हूं।

हे सम्माननीय लोगो! मुझे बहुत विचार करने के बाद और ख़ुदा की निरन्तर वह्यी के बाद ज्ञात हुआ है कि यद्यपि इस देश में

★**हाशिया :-** यह लेक्चर 3 सितम्बर 1904 ई० को हर धर्म और मिल्लत तथा हर वर्ग के बड़े समूह में लाहौर के महान जलसे में पढ़ा गया अखबार आम तथा पंजा फ़ौलाद इत्यादि के हवाले से जलसे में उपस्थित लोगों की संख्या दस-बारह हज़ार से भी अधिक थी। जलसे की सीमाओं से बाहर खड़े दर्शक इस अनुमान के अतिरिक्त थे। (हाशिया लेक्चर लाहौर संस्करण द्वितीय)

विभिन्न समुदाय बड़ी संख्या में पाए जाते हैं और धार्मिक मतभेद एक बाढ़ के समान हरकत कर रहे हैं तथापि वह बात जो इस मतभेद की प्रचुरता का कारण है वह वास्तव में एक ही है और वह यह है कि अधिकतर इन्सानों के अन्दर से रूहानियत और ख़ुदा से डरने की शक्ति कम हो गई है और वह आकाशीय प्रकाश जिस के द्वारा इन्सान सच और झूठ में अन्तर कर सकता है वह लगभग बहुत से हृदयों में से जाता रहा है और संसार एक नास्तिकता का रंग ग्रहण करता जाता है। अर्थात् जीभों पर तो ख़ुदा और परमेश्वर है और हृदयों में नास्तिक मतों के विचार बढ़ते जाते हैं। इस बात पर यह गवाह है कि क्रियात्मक हालतें यथायोग्य सही नहीं हैं। सब कुछ मौखिक तौर पर कहा जाता है परन्तु क्रियात्मक तौर पर दिखाया नहीं जाता किन्तु यदि कोई गुप्त ईमानदार है तो मैं उस पर कोई प्रहार नहीं करता। परन्तु सामान्य हालतें जो सिद्ध हो रही हैं वे यही हैं कि जिस उद्देश्य के लिए धर्म को इन्सान से संलग्न किया गया है वह उद्देश्य ग़ायब है। हृदय की वास्तविक पवित्रता और ख़ुदा तआला का सच्चा प्रेम और उसकी प्रजा की सच्ची सहानुभूति, शालीनता, दया, न्याय, विनय और अन्य समस्त पवित्र आचरण संयम, शुद्धता तथा सच्चाई जो एक धर्म की रूह है उसकी ओर अधिकांश इंसानों को ध्यान नहीं। अफ़सोस का स्थान है कि संसार में धार्मिक रंग में तो युद्ध लड़ाई में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है परन्तु रूहानियत कम होती जाती है। धर्म का मूल उद्देश्य उस सच्चे ख़ुदा का पहचानना है जिसने इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पैदा किया है और उसके प्रेम में उस स्थान तक पहुँचना है जो ग़ैर के प्रेम को जला देता है और उसकी स्रष्टि (मख़्लूक) से हमदर्दी

करना है तथा वास्तविक पवित्रता का लिबास पहनना है। परन्तु मैं देखता हूं कि यह उद्देश्य इस युग में ताक़ पर है (पृथक है) और प्राय: लोग नास्तिक धर्म की किसी शाखा को अपने हाथ में लिए बैठे हैं और ख़ुदा तआला की पहचान बहुत कम हो गई है। इसी कारण पृथ्वी पर प्रतिदिन पाप करने की दिलेरी बढती जाती है। क्योंकि यह बड़ी स्पष्ट बात है कि जिस चीज़ की पहचान न हो न उसकी कद्र दिल में होती है और न उसका प्रेम होता है और न उसका भय होता है। भय,प्रेम और गुण परखने के समस्त प्रकार पहचान के बाद पैदा होते हैं। अत: इस से स्पष्ट है कि आजकल संसार में पापों की प्रचुरता मारिफ़त (ख़ुदा को पहचानना) की कमी के कारण है और सच्चे धर्म की निशानियों में से यह एक बहुत बड़ी निशानी है कि ख़ुदा तआला की मारिफ़त और उसकी पहचान के बहुत से माध्यम उसमें मौजूद हों ताकि इन्सान पाप से रुक सके और ताकि वह ख़ुदा तआला के सौन्दर्य से अवगत होकर पूर्ण प्रेम और इश्क का भाग ले और ताकि वह संबंध विच्छेद की हालत को नर्क से अधिक समझे। यह सच्ची बात है कि पाप से बचना और ख़ुदा तआला के प्रेम में लीन हो जाना इन्सान के लिए एक महान उद्देश्य है और यही वह वास्तविक आराम है जिसे हम स्वर्गीय जीवन कट सकते हैं। समस्त इच्छाएं जो ख़ुदा तआला की सहमति के विपरीत हैं नर्क की अग्नि हैं और उन इच्छाओं के अनुकरण में उम्र गुज़ारना एक नारकी जीवन है। परन्तु यहां प्रश्न यह है कि इस नारकी जीवन से मुक्ति कैसे प्राप्त हो? इसके उत्तर में जो ज्ञान ख़ुदा ने मुझे दिया है वह यही है कि उस अग्नि-गृह से मुक्ति ऐसी ख़ुदाई मारिफ़त पर निर्भर है जो वास्तविक एवं पूर्ण हो। क्योंकि

मानवीय भावनाएं जो अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं वह एक पूर्ण श्रेणी का सैलाब (बाढ़) है जो ईमान को तबाह करने के लिए बड़ी तीव्रता से बह रहा है और कामिल के अतिरिक्त कामिल का निवारण असंभव है। अतः इसी कारण से मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक पूर्ण मारिफ़त की आवश्यकता है। क्योंकि कहावत मशहूर है कि लोहे को लोहे के साथ ही तोड़ सकते हैं। यह बात अधिक तर्कों की मुहताज नहीं कि क़द्र पहचानना प्रेम और भय ये सब बातें मारिफ़त अर्थात् पहचानने से ही पैदा होती हैं। यदि एक बच्चे के हाथ में उदाहरणतया हीरे का एक ऐसा टुकड़ा दिया जाए जिसका मूल्य कई करोड़ रुपया हो सकता है तो वह केवल उसकी उसी सीमा तक क़द्र करेगा जैसा कि एक खिलौने की करता है और यदि एक व्यक्ति को उसकी अज्ञानता की हालत में शहद में ज़हर मिला कर दिया जाए तो वह उसे शौक से खाएगा और यह नहीं समझेगा कि इसमें मेरी मौत है क्योंकि उसे ऐसे ज़हर की मारिफ़त (पहचान) नहीं। परन्तु तुम जानते हुए एक सांप के बिल में हाथ नहीं डाल सकते। क्योंकि तुम्हें मालूम है कि ऐसे काम से मरने की आशंका है। ऐसा ही तुम एक तीव्र विष को जान-बूझ कर खा नहीं सकते क्योंकि तुम्हें यह मारिफ़त प्राप्त है कि इस विष के खाने से मारे जाओगे। फिर क्या कारण है कि उस मौत की तुम कुछ भी परवाह नहीं करते कि जो ख़ुदा के आदेशों को तोड़ने से तुम पर आ जाएगी। स्पष्ट है कि उसका यही कारण है कि यहां तुम्हें ऐसी मारिफ़त भी प्राप्त नहीं जैसा कि तुम्हें सांप और विष की मारिफ़त प्राप्त है अर्थात् उन चीज़ों की पहचान है। यह बिल्कुल निश्चित है और कोई तर्कशास्त्र इस आदेश को तोड़ नहीं सकता

कि पूर्ण मारिफ़त मनुष्य को उन समस्त कार्यों से रोकती है जिन में मनुष्य के जान और माल की हानि हो और ऐसे रुकने में मनुष्य किसी कफ़्फ़ारे का मुहताज नहीं। क्या यह सच नहीं कि बदमाश लोग भी जो अपराधों के अभ्यस्त होते हैं हज़ारों ऐसी कामवासना सबंधी भावनाओं से पृथक हो जाते हैं जिन्हें वे निस्सन्देह जानते हैं कि हाथों हाथ पकड़े जाएंगे और कठोर दण्ड दिए जाएंगे और तुम देखते हो कि वे लोग प्रकाशमान दिन में दुकानों को लूटने के लिए आक्रमण नहीं कर सकते जिनमें हज़ारों रुपए खुले पड़े हैं और उन के रास्ते पर पुलिस के बीसियों सिपाही हथियारों के साथ घूम रहे हैं। तो क्या वे लोग चोरी या जब्र के साथ प्राप्त करने से इसलिए रुकते हैं कि किसी कफ़्फ़ार: पर उन्हें सुदृढ़ ईमान है या किसी सलीबी आस्था का उनके हृदयों पर रोब है? नहीं, अपितु केवल इसलिए कि वे पुलिस की काली-काली वर्दियों को पहचानते हैं और उनकी तलवारों की चमक से उनके दिलों पर कपकपी पड़ती है और उनको इस बात की पूर्ण मारिफ़त प्राप्त है कि वे मार-पीट से गिरफ्तार हो कर तुरन्त जेलखाना में भेजे जायेंगे। और इस सिद्धांत पर केवल मनुष्य ही नहीं अपितु जानवर भी पाबंद हैं। एक आक्रमणकारी शेर जलती हुई आग में स्वयं को नहीं डाल सकता यद्यपि कि उसके दूसरी ओर एक शिकार भी मौजूद हो। और एक भेड़िया ऐसी बकरी पर आक्रमण नहीं कर सकता जिसके सर पर उसका मालिक एक भरी हुई बन्दूक और खिंची हुई तलवार के साथ खड़ा है। अत: हे प्यारो! यह अत्यंत सच्चा और परखा हुआ फ़लसफा है कि मनुष्य पाप से बचने के लिए पूर्ण मारिफ़त का मुहताज है न कि किसी कफ़्फ़ारे का। मैं सच-सच

कहता हूँ कि यदि नूह की क़ौम को वह पूर्ण मारिफ़त प्राप्त होती जो पूर्ण भय को पैदा करती है तो वह कभी न डूबती। और यदि लूत[अ०] की क़ौम को वह पहचान प्रदान की जाती तो उन पर पत्थर न बरसते और यदि इस देश को अल्लाह की हस्ती की वह पहचान प्राप्त हो जाती जो शरीर पर भय से थरथराहट पैदा करती है तो इस पर ताऊन से वह तबाही न आती जो आ गयी। परन्तु अधूरी मारिफ़त कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती और न उसका परिणाम जो भय और प्रेम है पूर्ण हो सकता है। जो पूर्ण ईमान नहीं वह बेफ़ायदा हैं और मुहब्बत जो पूर्ण नहीं वह बेफ़ायदा है और भय जो पूर्ण नहीं वह बेफ़ायदा है और मारिफ़त जो पूर्ण नहीं वह बेफ़ायदा है तथा प्रत्येक भोजन और शरबत जो पूर्ण नहीं वह बेफ़ायदा है। क्या तुम भूख की हालत में केवल एक दाने से तृप्त हो सकते हो? या प्यास की हालत में केवल एक बूँद से तृप्त हो सकते हो? हे सुस्त साहस वालो! और सत्य की अभिलाषा में आलस करने वालो! तुम थोड़ी मारिफ़त से तथा थोड़े प्रेम से और थोड़े भय से ख़ुदा की बड़ी कृपा के प्रत्याशी कैसे हो सकते हो? पाप से पवित्र करना ख़ुदा का कार्य है और अपने प्रेम से हृदय को भर देना उसी शक्तिमान एवं शक्तिशाली का काम है और अपनी श्रेष्ठता का भय किसी हृदय में स्थापित करना उसी हस्ती के इरादे से सम्बद्ध है और प्रकृति का नियम सदैव से ऐसा ही है कि यह सब कुछ पूर्ण मारिफ़त के बाद मिलता है और भय, प्रेम और कद्रदानी की जड़ पूर्ण मारिफ़त है। तो जिसको पूर्ण मारिफ़त दी गई उसे भय और प्रेम भी पूर्ण दिया गया और जिसको भय और प्रेम पूर्ण रूप से दिया गया उसे प्रत्येक पाप से जो धृष्टता से पैदा होता है मुक्ति दी गयी। अत: हम

इस मुक्ति के लिए न किसी खून के मुहताज हैं और न किसी सलीब के और न हमें किसी कफ़्फ़ार: की आवश्यकता है अपितु हम केवल एक क़ुर्बानी के मुहताज हैं जो अपने नफ़्स की क़ुर्बानी है जिस की आवश्यकता को हमारी प्रकृति महसूस कर रही है। ऐसी क़ुर्बानी का नाम दूसरे शब्दों में इस्लाम है। इस्लाम के मायने हैं ज़िबह होने के लिए गर्दन आगे रख देना। अर्थात् पूर्ण ख़ुशी के साथ अपनी रूह को ख़ुदा की चौखट पर रख देना। यह प्यारा नाम सम्पूर्ण शरीअत की रूह और सम्पूर्ण आदेशों का प्राण है। ज़िबह होने के लिए अपनी हार्दिक प्रसन्नता और ख़ुशी से गर्दन आगे रख देना पूर्ण प्रेम और पूर्ण इश्क़ को चाहता है और पूर्ण प्रेम मारिफ़त को चाहता है। अत: इस्लाम का शब्द इसी बात की ओर संकेत करता है कि वास्तविक क़ुर्बानी के लिए पूर्ण मारिफ़त तथा पूर्ण प्रेम की आवश्यकता है न किसी अन्य चीज़ की आवश्यकता। इसी की ओर ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में संकेत फ़रमाता है -

لَنۡ یَّنَالَ اللّٰہَ لُحُوۡمُھَا وَلَا دِمَآؤُھَا وَلٰکِنۡ یَّنَالُہُ التَّقۡوٰی مِنۡکُمۡ

(अल हज्ज-38)

अर्थात् तुम्हारी क़ुर्बानियों के न तो गोश्त मुझ तक पहुँच सकते हैं और न ख़ून अपितु केवल यह क़ुर्बानी मुझ तक पहुंचती है कि तुम मुझ से डरो और मेरे लिए संयम धारण करो।

अब जानना चाहिए कि इस्लाम धर्म के समस्त आदेशों का मूल उद्देश्य यही है कि वह वास्तविकता जो इस्लाम शब्द में छुपी है उस तक पहुंचाया जाए। इसी उद्देश्य से पवित्र क़ुर्आन में ऐसी शिक्षाएं हैं जो ख़ुदा को प्यारा बनाने के लिए प्रयास कर रही हैं।

कहीं उसकी सुन्दरता और सौन्दर्य को दिखाती हैं और कहीं उसके उपकारों को स्मरण कराती हैं। क्योंकि किसी का प्रेम या तो सुन्दरता के द्वारा दिल में बैठती है और या उपकार के द्वारा। अत: लिखा है कि ख़ुदा अपनी समस्त ख़ूबियों की दृष्टि से भागीदार रहित अकेला है, उसमें कोई भी दोष नहीं। वह संग्रह है सभी पूर्ण विशेषताओं का और द्योतक है समस्त पवित्र कुदरतों का और स्रोत है समस्त सृष्टि का और उद्‌गम है समस्त वरदानों का और मालिक है समस्त प्रतिफल एवं दण्ड का और लौटने का स्थान है समस्त मामलों का और निकट है बावजूद दूरी के और दूर है बावजूद निकट होने के। और सर्वोपरि है परन्तु नहीं कह सकते कि उसके नीचे कोई और भी है और वह सब चीज़ों से अधिक गुप्त है परन्तु नहीं कह सकते कि उस से कोई अधिक प्रकट है, वह जीवित है अपने अस्तित्व से और प्रत्येक चीज़ उसके साथ जीवित है, वह स्थापित है अपने अस्तित्व से और प्रत्येक चीज़ उसके साथ स्थापित है। उसने प्रत्येक चीज़ को उठा रखा है और कोई चीज़ नहीं जिसने उसको उठा रखा हो। कोई चीज़ नहीं जो उसके बिना स्वयं पैदा हुई है या उसके बिना स्वयं जीवित रह सकती है, वह प्रत्येक चीज़ को घेरे हुए है परन्तु नहीं कह सकते कि कैसा घेरा है, वह आकाश और पृथ्वी की प्रत्येक चीज़ का प्रकाश है और प्रत्येक प्रकाश उसी के हाथ से चमका और उसी के अस्तित्व का प्रतिबिम्ब है, वह समस्त लोकों का प्रतिपालक है। कोई रूह नहीं जो उस से पोषण न पाती हो और स्वयंभू हो। किसी रूह की कोई शक्ति नहीं जो उस से न मिली हो और स्वयं भू हो, और उसकी रहमतें दो प्रकार की हैं-

(1)- एक वे जो किसी कर्ता के कर्म के पहले किए बिना सदैव से प्रकट हैं जैसा कि पृथ्वी और आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, पानी, अग्नि, वायु और समस्त संसार के समस्त कण जो हमारे आराम के लिए बनाए गए हैं, ऐसा ही जिन-जिन चीज़ों की हमें आवश्यकता थी वे समस्त चीज़ें हमारे जन्म से पहले ही हमारे लिए उपलब्ध की गईं और यह सब उस समय किया गया जब हम स्वयं मौजूद न थे, न हमारा कोई कर्म था। कौन कह सकता है कि सूर्य मेरे कर्म के कारण पैदा किया गया या पृथ्वी मेरे किसी शुभ कर्म के कारण बनाई गई। अतः यह वह रहमत (दया) है जो मनुष्य और उसके कर्मों से पहले प्रकट हो चुकी है जो किसी के कर्म का परिणाम नहीं।

(2)- दूसरी रहमत वह है जो कर्मों पर क्रमबद्ध होती है, इसकी व्याख्या की कुछ आवश्यकता नहीं ऐसा ही पवित्र क़ुर्आन में आया है कि ख़ुदा का अस्तित्व प्रत्येक दोष से पवित्र है और प्रत्येक हानि से मुक्त है और वह चाहता है कि इन्सान भी उसकी शिक्षा का अनुकरण करके दोषों से पवित्र हो और वह फ़रमाता है-

مَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖٓ أَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ أَعْمٰى

(बनी इस्राईल-73)

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में अँधा रहेगा और उस अद्वितीय अस्तित्व का उसे दर्शन नहीं होगा वह मरने के बाद अंधा ही होगा और अंधकार उस से पृथक नहीं होगा क्योंकि ख़ुदा को देखने के लिए इसी संसार में हवास (ज्ञानेन्द्रियां) मिलते हैं और जो व्यक्ति उन ज्ञानेन्द्रियों को संसार से साथ नहीं ले जाएगा वह आख़िरत में भी ख़ुदा को देख नहीं सकेगा। इस आयत में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट समझा

दिया है कि वह मनुष्य से किस उन्नति को चाहता है और मनुष्य उसकी शिक्षा के अनुकरण से कहां तक पहुँच सकता है। तत्पश्चात वह पवित्र क़ुर्आन में उस शिक्षा को प्रस्तुत करता है जिस के माध्यम तथा जिस पर अमल करने से इसी संसार में ख़ुदा का दर्शन उपलब्ध हो सकता है। जैसा कि वह फ़रमाता है-

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا
وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا (अल कहफ़-111)

अर्थात् जो व्यक्ति चाहता है कि इसी संसार में ख़ुदा का दर्शन प्राप्त हो जाए जो सच्चा ख़ुदा और स्रष्टा है तो चाहिए कि वह ऐसे शुभ कर्म करे जिन में किसी प्रकार की ख़राबी न हो। अर्थात् उसके कर्म न लोगों को दिखाने के लिए हों, न उनके कारण हृदय में अंहकार पैदा हो कि मैं ऐसा हूं और ऐसा हूं और न वह कर्म अधूरा और अपूर्ण हो और न उन में कोई ऐसी दुर्गन्ध हो जो व्यक्तिगत प्रेम के विरुद्ध हो अपितु चाहिए कि सच्चाई और वफ़ादारी से भरे हुए हों और साथ उसके यह भी चाहिए कि प्रत्येक प्रकार के शिर्क से बचाव हो। न सूर्य, न चन्द्रमा, न आकाश के सितारे, न वायु, न अग्नि, न पानी, न पृथ्वी की अन्य वस्तु उपास्य (मा'बूद) ठहराई जाए और न संसार के सामान को ऐसा सम्मान दिया जाए और उन पर ऐसा भरोसा किया जाए कि जैसे वे ख़ुदा के भागीदार हैं और न अपनी हिम्मत और प्रयास को कुछ चीज़ समझा जाए कि यह भी शिर्क के प्रकारों में से एक प्रकार है। अपितु सब कुछ करके यह समझा जाए कि हमने कुछ नहीं किया और न अपने ज्ञान पर कोई अभिमान किया जाए और न अपने अमल (कर्म) पर गर्व। अपितु स्वयं को वास्तव

में अनाड़ी समझें और आलसी समझें तथा ख़ुदा तआला की चौखट पर हर समय रूह गिरी रहे और दुआओं के साथ उस के वरदान को अपनी ओर खींचा जाए और उस व्यक्ति की तरह हो जाएं जो बहुत प्यासा और असहाय भी है और उसके सामने एक झरना प्रकट हुआ है अत्यन्त शुद्ध और मधुर। अत: उसने गिरते-पड़ते बहरहाल स्वयं को उस झरने तक पहुँचा दिया और अपने होठों को उस झरने पर रख दिया और पृथक न हुआ जब तक तृप्त न हुआ और फिर क़ुर्आन में हमारा ख़ुदा अपनी ख़ूबियों के बारे में फ़रमाता है-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ۔ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ

(अल इख़्लास 2 से 5)

अर्थात् तुम्हारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अपने अस्तित्व और विशेषताओं में अकेला है। न कोई अस्तित्व उसके अस्तित्व जैसा अनादि और अनश्वर अर्थात् अमर है, न किसी चीज़ की विशेषताएं उसकी विशेषताओं के समान हैं। मनुष्य का ज्ञान किसी शिक्षक का मुहताज है और फिर सीमित है परन्तु उसका ज्ञान किसी शिक्षक का मुहताज नहीं इसके बावजूद असीमित है। मनुष्य का सुनना वायु का मुहताज है और सीमित है परन्तु ख़ुदा का सुनना निजी शक्ति से है और सीमित नहीं, और मनुष्य की दृष्टि सूर्य या किसी अन्य प्रकाश की मुहताज है और फिर सीमित है परन्तु ख़ुदा की दृष्टि निजी प्रकाश से है और असीमित है। ऐसा ही मनुष्य की पैदा करने की क़ुदरत किसी तत्त्व की मुहताज है और इसी प्रकार समय की मुहताज और फिर सीमित है लेकिन ख़ुदा की पैदा करने की क़ुदरत न किसी माद्दा की मुहताज है न किसी समय की मुहताज और असीमित है क्योंकि उसकी

समस्त विशेषताएं अद्वितीय और अतुल्य हैं। और जैसे कि उसके कोई समान नहीं उसकी विशेषताओं के भी कोई समान नहीं। यदि एक विशेषता में वह अपूर्ण हो तो फिर समस्त विशेषताओं में अपूर्ण होगा। इसलिए उसकी तौहीद (एकेश्वरवाद) स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि वह अपने अस्तित्व की तरह अपनी समस्त विशेषताओं में अद्वितीय और अतुल्य न हो। फिर इस से आगे उपरोक्त आयत के ये मायने हैं कि ख़ुदा न किसी का बेटा है और न कोई उसका बेटा है क्योंकि वह स्वयं में निस्पृह है उसे न बाप की आवश्यकता है और न बेटे की। यह तौहीद है जो पवित्र क़ुर्आन ने सिखाई है जो ईमान का आधार है। और कर्मों के बारे में यह सारगर्भित आयत पवित्र क़ुर्आन में है-

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى
وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ (अन्नहल-91)

अर्थात् ख़ुदा तुम्हें आदेश देता है कि इन्साफ़ करो और न्याय पर स्थापित हो जाओ और यदि इस से अधिक पूर्ण (कामिल) बनना चाहो तो फिर उपकार करो। अर्थात् ऐसे लोगों से व्यवहार और नेकी करो जिन्होंने तुम से कोई नेकी नहीं की और यदि इस से अधिक कामिल बनना चाहो तो केवल व्यक्तिगत हमदर्दी से और मात्र स्वाभाविक जोश से किसी धन्यवाद और कृतज्ञता की नीयत के बिना मानव जाति से नेकी करो। जैसा कि मां अपने बच्चे से केवल अपने स्वाभाविक जोश से नेकी करती है। फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें इस से मना नहीं करता है कि कोई अत्याचार करो या उपकार जतलाओ या सच्चे हमदर्द के कृतघ्न बनो। इसी नीयत की व्याख्या में एक अन्य स्थान में फ़रमाया है-

وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ۝

(अद्दहर 9-10)

अर्थात् कामिल ईमानदार जब ग़रीबों, अनाथों और कैदियों को भोजन देते हैं तो केवल ख़ुदा के प्रेम से देते हैं न कि किसी अन्य मतलब से देते हैं और वे उन्हें संबोधित करके कहते हैं कि यह सेवा विशेष ख़ुदा के लिए है। इस का हम कोई बदला नहीं चाहते और न हम यह चाहते हैं कि हमारा धन्यवाद करो। फिर प्रतिफल एवं दण्ड के बारे में फ़रमाया-

وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ

(अश्शूरा-41)

अर्थात् बुराई का बदला उतनी ही बुराई है। दांत के बदले दांत, आंख के बदले आंख, गाली के बदले गाली और जो व्यक्ति क्षमा कर दे परन्तु ऐसा क्षमा करना जिसका परिणाम कोई सुधार न कि कोई खराबी। अर्थात् जिस बात को क्षमा किया गया है वह कुछ सुधर जाए और बुराई से रुक जाए तो इस शर्त से क्षमा करना प्रतिशोध से उत्तम होगा और क्षमा करने वाले को इस का बदला मिलेगा। यह नहीं कि प्रत्येक मौक़ा, बे मौक़ा एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा भी फेर दिया जाए यह हिकमत से दूर है। और कभी बुरों से नेकी करना ऐसा हानिप्रद हो जाता है कि जैसे नेकों से बुराई की है और फिर फ़रमाया-

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَ بَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ

(हाम्मीम अस्सज्दह-35)

अर्थात् यदि कोई तुझ से नेकी करे तो तू उससे अधिक नेकी

कर और यदि तू ऐसा करेगा तो तुम्हारे बीच कोई शत्रुता भी होगी तो वह ऐसी मित्रता में बदल जाएगी कि जैसे वह व्यक्ति एक मित्र भी है और एक रिश्तेदार भी और फ़रमाया-

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا

(अल हुजुरात-13)

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ

(अल हुजुरात-12)

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ

(अल हुजुरात-14)

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ

(अल हुजुरात-12)

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ

(अल हज्ज-31)

وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا

(अल अहज़ाब-71)

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا

(आले इमरान-104)

अर्थात् चाहिए कि एक तुम्हारा दूसरे की शिकायत न करे। क्या तुम पसन्द करते हो कि मुर्दे भाई का गोश्त खाओ और चाहिए कि एक क़ौम दूसरी क़ौम पर हंसी न करे कि हमारी ऊँची जाति और उनकी कम है। संभव है कि वे तुम से अच्छे हों और ख़ुदा के नज़दीक तो अधिक बुज़ुर्ग वही है जो अधिक नेकी और संयम से काम लेता है। क़ौमों की भिन्नता कुछ चीज़ नहीं और तुम बुरे नामों से जिन से लोग

चिढ़ते हैं या अपना अपमान समझते हैं उन को मत पुकारो, अन्यथा ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारा नाम बदकार (दुराचारी) होगा और मूर्तियों तथा झूठ से बचो और ये दोनों अपवित्र हैं और जब बात करो तो हिकमत और तर्कसंगत करो और व्यर्थ बोलने से बचो। और चाहिए कि तुम्हारे समस्त अंग और समस्त शक्तियाँ ख़ुदा की आज्ञाकारी हों। और तुम सब एक होकर उसके आज्ञापालन में लगो।

फिर एक स्थान में फ़रमाया-

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝

(अत्तकासुर-2 से 9)

हे वे लोगो जो ख़ुदा से लापरवाह हो! संसार की चाहत ने तुम्हें लापरवाह किया यहां तक कि तुम कब्रों में दाखिल हो जाते हो और लापरवाही से नहीं रुकते। यह तुम्हारी ग़लती है और शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा फिर मैं कहता हूं कि शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा यदि तुम्हें निश्चित ज्ञान प्राप्त हो जाए तो तुम ज्ञान के द्वारा सोच कर अपने नर्क को देख लो और तुम्हें मालूम हो जाए कि तुम्हारा जीवन नारकी है फिर यदि इस से बढ़कर तुम्हें मारिफ़त (पहचान) हो जाए तो तुम पूर्ण विश्वास की आंख से देख लो कि तुम्हारा जीवन नारकी है। फिर वह समय भी आता है कि तुम नर्क में डाले जाओगे और प्रत्येक भोग -विलास और असंतुलन के बारे में पूछे जाओगे अर्थात् अज़ाब में गिरफ़्तार होकर हक्कुल यक़ीन (अटल विश्वास) तक पहुँच

जाओगे। इन आयतों में इस बात की ओर संकेत है कि विश्वास तीन प्रकार का होता है। एक यह कि केवल ज्ञान और अनुमान से प्राप्त होता है जैसा कि कोई दूर से धुआं देखे और अनुमान और बुद्धि के द्वारा समझ ले कि उस स्थान पर अवश्य आग होगी। फिर विश्वास का दूसरा प्रकार यह है कि उस आग को अपनी आँखों से देख ले। फिर तीसरा प्रकार विश्वास का यह है कि जैसे उस आग में हाथ डाल दे और उसकी जलाने की शक्ति का स्वाद चख ले। तो ये तीन प्रकार हुए। इल्मुलयक़ीन (ज्ञान द्वारा विश्वास), ऐनुलयक़ीन (आंख से देखकर विश्वास), हक़्क़ुल यकीन (अटल विश्वास) इस आयत में ख़ुदा तआला ने समझाया कि मनुष्य का सम्पूर्ण आराम ख़ुदा तआला के सानिध्य और प्रेम में है और जब उस से संबंध तोड़ कर संसार की ओर झुके तो यह नारकी जीवन है और इस नारकी जीवन पर अन्ततः प्रत्येक मनुष्य सूचना पा लेता है और यद्यपि उस समय सूचना पाए जबकि सहसा माल-व-सामान तथा संसार के संबधों को छोड़कर मरने लगे। फिर दूसरे स्थान में अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है-

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۝ (अर्रहमान-47)

अर्थात् जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के मुक़ाम और सम्मान का ध्यान रख कर और इस बात से डर कर कि एक दिन ख़ुदा के सामने पूछा जाएगा गुनाह (पाप) को छोड़ता है उसे दो स्वर्ग प्रदान किए जाएँगे

(1) प्रथम इसी संसार में उसे स्वर्ग का जीवन प्रदान किया जाएगा और उसमें एक पवित्र परिवर्तन पैदा हो जाएगा और ख़ुदा

उसका अभिभावक और प्रतिपालक होगा।

(2) द्वितीय- मरने के बाद उसे अनश्वर स्वर्ग प्रदान किया जाएगा। इसलिए कि वह ख़ुदा से डरा और उसको संसार पर तथा कामवासना संबंधी भावनाओं पर प्राथमिक कर लिया।

फिर पवित्र क़ुर्आन में एक अन्य स्थान में फ़रमाता है-

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا وَأَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝
إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝
عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝

(अद्दहर-5 से 7)

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝ عَيْنًا
فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝ (अद्दहर-18 से 19)

अर्थात् हम ने काफ़िरों के लिए जो हमारा प्रेम दिल में नहीं रखते और संसार की ओर झुके हुए हैं ज़ंजीर और गर्दन के तौक़ तथा दिल के जलने के सामान तैयार कर रखे हैं और उन के पैरों में संसार के प्रेम की जंज़ीरें हैं और गर्दनों में ख़ुदा को त्यागने का एक तौक़ है जिस से सर उठा कर ऊपर को नहीं देख सकते और संसार की ओर झुके जाते हैं तथा सांसारिक इच्छाओं की उनके हृदयों में हर समय एक जलन है परन्तु वे जो सदाचारी हैं वे इसी संसार में ऐसा नूरी शर्बत पी रहे हैं जिसने उनके हृदयों में से संसार का प्रेम ठंडा कर दिया है और संसार की चाहत की प्यास बुझा दी है, काफ़ूरी शर्बत का एक झरना है जो उन को प्रदान किया जाता है और वे उस झरने को फाड़-फाड़ कर नहर के रूप में कर देते हैं ताकि वे निकट और दूर के प्यासों को उसमें भागीदार कर लें। और जब झरना नहर के

रूप में आ जाता है और ईमान की शक्ति बढ़ जाती है और ख़ुदा का प्रेम पोषण और विकास पाने लगता है तब उनको एक और शर्बत पिलाया जाता है जो ज़ंजबीली शर्बत कहलाता है। अर्थात् पहले तो वे काफ़ूरी शर्बत पीते हैं जिसका काम केवल इतना है कि संसार-प्रेम उनके हृदयों पर से ठण्डा कर दे। परन्तु इसके पश्चात् वे एक गर्म शर्बत के भी मुहताज हैं ताकि ख़ुदा के प्रेम की गर्मी उनमें भड़के क्योंकि केवल बुराई का त्याग करना कमाल (ख़ूबी) नहीं है। तो इसी का नाम ज़ंजबीली शर्बत है और इस झरने का नाम सलसबील है, जिन के मायने हैं कि ख़ुदा का मार्ग पूछ।

फिर एक स्थान में फ़रमाया-

قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَکّٰىهَا ۝ وَقَدۡ خَابَ مَنۡ دَسّٰىهَا ۝

(अश्शम्स-10,11)

अर्थात् कामवासनाओं की गिरफ्तारियों से वह व्यक्ति मुक्ति पा गया और स्वर्ग के जीवन का मालिक हो गया जिसने अपने नफ़्स को पवित्र बना लिया और असफल और नाकाम वह व्यक्ति रहा जिसने अपने नफ़्स को पृथ्वी में धंसाय और आकाश की ओर मुख न किया। और चूंकि ये स्थान केवल मानवीय प्रयास से प्राप्त नहीं हो सकते इसलिए पवित्र क़ुर्आन में जगह-जगह दुआ की प्रेरणा दी है और कठोर परिश्रम (तपस्या) की ओर रुचि दिलाई है। जैसा कि वह फ़रमाता है-

اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ ؕ (अलमोमिन-61)

अर्थात् दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा।

और फिर फ़रमाता है-

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَادَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِىْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِىْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝

(अल बक़रह-187)

अर्थात् यदि मेरे बन्दे मेरे अस्तित्व से प्रश्न करें कि उसका अस्तित्व क्योंकर सिद्ध है और क्योंकर समझा जाए कि ख़ुदा है? तो इसका उत्तर यह है कि मैं बहुत ही निकट हूं। मैं अपने पुकारने वाले को उत्तर देता हूं और वह जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी आवाज़ सुनता हूं और उससे वार्तालाप करता हूं। अत: चाहिए कि स्वयं को ऐसा बना दें कि मैं उन से बातचीत कर सकूं। और मुझ पर पूर्ण ईमान लाएं ताकि उनको मेरा मार्ग मिले।

फिर फ़रमाता है-

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ (अल अन्कबूत-70)

अर्थात् जो लोग हमारे मार्ग में और हमारी चाहत के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की कोशिशें और परिश्रम करते हैं हम उन को अपना मार्ग दिखा देते हैं।

फिर फ़रमाता है-

وَ كُوْنُوْا مَعَ الصَّادِقِيْنَ

अर्थात् यदि ख़ुदा से मिलना चाहते हो तो दुआ भी करो और कोशिश भी करो और सच्चों की संगत में भी रहो, क्योंकि इस मार्ग में संगत भी शर्त है। ये समस्त आदेश वे हैं जो मनुष्य को इस्लाम की वास्तविकता तक पहुंचाते हैं। क्योंकि जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूं इस्लाम की वास्तविकता यह है कि अपनी गर्दन ख़ुदा के आगे क़ुर्बानी के बकरे की तरह रख देना और अपने समस्त इरादों से खोए जाना

और ख़ुदा के इरादे और ख़ुशी में लीन हो जाना और ख़ुदा में गुम हो कर अपने ऊपर एक मौत ले आना और उसके व्यक्तिगत प्रेम से पूरा रंग प्राप्त करके केवल प्रेम के जोश से उस का आज्ञापालन करना न किसी अन्य कारण से। और ऐसी आंखें प्राप्त करना जो केवल ख़ुदा के साथ देखती हों और ऐसे कान प्राप्त करना जो केवल उसके साथ सुनते हों और ऐसा दिल पैदा करना जो सर्वथा उसकी ओर झुका हुआ हो और ऐसी जीभ प्राप्त करना जो उसके बुलाए बोलती हो। यह वह मुक़ाम है जिस पर समस्त साधनाएं समाप्त हो जाती हैं और मानवीय शक्तियां अपने दायित्व के समस्त कार्य कर चुकी होती हैं और मनुष्य के अहंकार पर पूर्ण रूप से मौत आ जाती है तब ख़ुदा तआला की दया अपने ज़िन्दा कलाम और चमकते हुए प्रकाशों के साथ दोबारा उसे जीवन प्रदान करती है और वह ख़ुदा के आनन्ददायक कलाम से सम्मानित होता है और वह बारीक से बारीक प्रकाश जिसे अक़्लें मालूम नहीं कर सकतीं और आंखें उसके मर्म तक नहीं पहुंचती वह स्वयं मनुष्य के हृदय से निकट हो जाता है। जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है-

نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ۝ (क़ाफ़-17)

अर्थात् हम उसकी शाह रग (मुख्य धमनी) से भी उसके अधिक निकट हैं। अतः वह ऐसा ही नश्वर मनुष्य को अपने सानिध्य से सम्मानित करता है तब वह समय आता है जब अंधापन दूर होकर आंखें प्रकाशित हो जाती हैं और मनुष्य अपने ख़ुदा को उन नई आँखों से देखता है और उसकी आवाज़ सुनता है और स्वयं को उसके प्रकाश की चादर के अन्दर लिपटा हुआ पाता है तब धर्म का उद्देश्य समाप्त

हो जाता है और मनुष्य अपने ख़ुदा के अवलोकन से घटिया जीवन का गन्दा चोला अपने अस्तित्व पर से फेंक देता है और एक प्रकाश का लिबास पहन लेता है। और न केवल वादे के तौर पर और न केवल आख़िरत की प्रतीक्षा में ख़ुदा के दर्शन तथा स्वर्ग का प्रतीक्षक रहता है अपितु इसी स्थान और इसी संसार में दर्शन वार्तालाप और जन्नत की नेमतों को पा लेता है। जैसा कि वह फ़रमाता है-

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ (हा मीम अस्सज्दह-31)

अर्थात् जो लोग यह कहते हैं कि हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो कामिल विशेषताओं का संग्रहीता है जिसके अस्तित्व और विशेषताओं में अन्य कोई भागीदार नहीं। और यह कह कर फिर वे दृढ़ता ग्रहण करते हैं और कितने ही भूचाल आएं और विपत्तियाँ उतरें तथा मौत का सामना हो उनके ईमान और सच्चाई में अन्तर नहीं आता, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं और ख़ुदा उन से वार्तालाप करता है और कहता है कि तुम विपत्तियों और भयंकर शत्रुओं से मत डरो और न गुज़र चुके संकटों से दुखित हो। मैं तुम्हारे साथ हूं और मैं इसी संसार में तुम्हें स्वर्ग देता हूं जिसका तुम्हें वादा दिया गया था तो तुम इस से प्रसन्न हो।

अब स्पष्ट हो कि ये बातें गवाही के बिना नहीं और ये ऐसे वादे नहीं कि जो पूरे नहीं हुए अपितु हज़ारों सूरमा इस्लाम धर्म में इस रूहानी स्वर्ग का स्वाद चख चुके हैं। वास्तव में इस्लाम वह धर्म है जिसके सच्चे अनुयायियों को ख़ुदा तआला ने पहले समस्त ईमानदारों

का वारिस ठहराया है और उनकी विभिन्न नेमतें इस दयनीय उम्मत को प्रदान कर दी हैं। और उसने इस दुआ को स्वीकार कर लिया है जो पवित्र क़ुर्आन ने स्वयं सिखाई थी। और वह यह है-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

(अल फ़ातिहा-6,7)

अर्थात् हमें वह मार्ग दिखा जो उन ईमानदारों का मार्ग है जिन पर तूने प्रत्येक इनाम किया है। अर्थात् जिन्होंने तुझ से हर प्रकार की बरकतें पाई हैं और तेरे वार्तालाप एवं संबोधन से सम्मानित हुए हैं और तुझ से दुआओं की स्वीकारिताएं प्राप्त की हैं और तेरी सहायता और मदद तथा मार्ग दर्शन उनके साथ संलग्न हुआ है और उन लोगों के मार्गों से हमें बचा जिन पर तेरा प्रकोप है और जो तेरे मार्ग को त्याग कर अन्य मार्गों की ओर चले गए हैं। यह वह दुआ है जो नमाज़ में पांच समय पढ़ी जाती है। यह बता रही है कि अंधा होने की अवस्था में संसार का जीवन भी एक नर्क है और फिर मरना भी एक नर्क है। और वास्तव में ख़ुदा का सच्चा आज्ञाकारी और वास्तव में मुक्ति पाने वाला वही हो सकता है जो ख़ुदा को पहचान ले और उसके अस्तित्व पर पूर्ण ईमान ले आए और वही है जो पाप को त्याग सकता है। और ख़ुदा के प्रेम में लीन हो सकता है। तो जिस दिल में यह इच्छा और यह चाहत नहीं कि ख़ुदा का वार्तालाप और सम्बोधन उसे निश्चित तौर पर प्राप्त हो वह एक मुर्दा दिल है। और जिस धर्म में यह शक्ति नहीं कि इस कमाल तक पहुंचा दे और अपने सच्चे अनुयायियों को ख़ुदा से परस्पर वार्तालाप करने वाला बना दे वह धर्म ख़ुदा की ओर

से नहीं और उसमें सच्चाई की रूह नहीं। ऐसा ही जिस किसी नबी ने इस मार्ग की ओर लोगों को नहीं चलाया कि ख़ुदा के वार्तालाप और सम्बोधन के अभिलाषी हों और पूर्ण मारिफ़त के इच्छुक हों वह नबी भी ख़ुदा की ओर से नहीं है। वह ख़ुदा पर झूठ बांधता है, क्योंकि मनुष्य का महान उद्देश्य जिस से वह पापों से मुक्ति पा सकता है यही है कि ख़ुदा के अस्तित्व और उसके प्रतिफल एवं दण्ड पर उसे पूर्ण विश्वास आए किन्तु उस ग़ैब से ग़ैब ख़ुदा पर क्योंकर विश्वास प्राप्त हो जब तक उसकी ओर से اَنَاالْمَوْجُوْدُ (मैं मौजूद हूं) की आवाज़ न सुनी जाए और जब तक मनुष्य उसकी ओर से खुले-खुले निशान न देखे क्योंकर उसकी हस्ती पर पूर्ण विश्वास कैसे आए। बौद्धिक तर्कों द्वारा ख़ुदा के अस्तित्व का पता लगाना केवल इस सीमा तक है कि सद्बुद्धि पृथ्वी और आकाश और उत्तम एवं सुदृढ़ अनुक्रम को देख कर यह कहती है कि इन दूरदर्शिता से परिपूर्ण उत्पादों का कोई रचयिता होना चाहिए परन्तु ये दिखा नहीं सकते कि वास्तव में रचयिता है भी और स्पष्ट है कि होना चाहिए केवल एक कल्पना है और है एक वास्तविकता का सबूत है और दोनों में खुला-खुला अन्तर है। अर्थात् पहली स्थिति में केवल रचयिता की आवश्यकता बताई गई है और दूसरी स्थिति में उसके वास्तव में मौजूद होने की गवाही दी जाती है। अतः इस युग में जब धर्मों की परस्पर खींच तान का एक प्रचंड सैलाब चल रहा है सत्य के अभिलाषी को इस वास्तविक उद्देश्य को भूलना नहीं चाहिए कि धर्म वही सच्चा है जो पूर्ण विश्वास द्वारा ख़ुदा को दिखा सकता है और ख़ुदा के वार्तालाप एवं संबोधन की श्रेणी तक पहुँचा सकता है और ख़ुदा से परस्पर बातचीत का सम्मान प्रदान कर

सकता है और इस प्रकार अपनी रूहानी शक्ति और रूह को पोषण करने वाली विशेषता से दिलों को गुनाह (पाप) के अंधकार से छुड़ा सकता है और उसके अतिरिक्त सब धोखा देने वाले हैं।

अब हम इस देश के कुछ धर्मों पर दृष्टि डालते हैं कि क्या वे ख़ुदा तआला की मारिफ़त के बारे में पूर्ण विश्वास तक पहुँचा सकते हैं और क्या उन की किताबों में यह वादा मौजूद है कि वे ख़ुदा के निश्चित वार्तालाप से सम्मानित करा सकते हैं और यदि मौजूद है तो क्या इस युग में उनमें से कोई उसका चरितार्थ पाया भी जाता है या नहीं? तो सर्वप्रथम उल्लेखनीय वह धर्म है जो मसीही धर्म के नाम से पुकारा जाता है। अत: स्पष्ट हो कि इस धर्म के बारे में हमें अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं क्योंकि मसीह लोगों की इस पर सहमति हो चुकी है कि मसीह के युग के पश्चात् इल्हाम और वह्यी पर मुहर लग गयी है और अब यह नेमत आगे नहीं बल्कि पीछे रह गयी है और अब इसे पाने का कोई भी मार्ग नहीं और क़यामत तक निराशा है और फैज़ (वरदान) का दरवाज़ा बन्द है और शायद यही कारण होगा कि मुक्ति पाने के लिए एक नयी स्कीम निकाली गयी है और एक नया नुस्खा प्रस्तावित किया गया है, जो समस्त संसार के सिद्धांत से निराला और बुद्धि, न्याय तथा दया के सर्वथा विपरीत है और वह यह है जो वर्णन किया जाता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने समस्त संसार के गुनाह अपने ज़िम्मे लेकर सलीब पर मरना स्वीकार किया ताकि उन की इस मौत से दूसरों की मुक्ति हो और ख़ुदा ने अपने निर्दोष बेटे को मारा ताकि पापियों को बचाए। परन्तु हमें कुछ समझ नहीं आता कि इस प्रकार की अन्यायपूर्ण मौत से दूसरों के दिल

गुनाह (पाप) की गन्दी प्रकृति से कैसे साफ़ और पवित्र हो सकते हैं और एक निर्दोष के क़त्ल होने से दूसरों को पहले पापों की माफ़ी का प्रमाण-पत्र मिल सकता है। अपितु इस पद्धति में न्याय और दया दोनों का खून है क्योंकि पापी के बदले में निष्पाप को पकड़ना न्याय के विरुद्ध है और बेटे को इस प्रकार अकारण निर्दयतापूर्वक क़त्ल करना दया के विरुद्ध है और इस कृत्य से लाभ बिल्कुल नहीं। अभी हम लिख चुके हैं कि पाप के सैलाब का मूल कारण मारिफ़त की कमी है। तो जब तक एक कारण मौजूद है तक तक कारक का निषेध कैसे हो सकता है। हमेशा कारण का अस्तित्व कारक को चाहता है अब आश्चर्य का स्थान है कि यह कैसा दर्शनशास्त्र है कि पाप करने का कारण जो ख़ुदा तआला की मारिफ़त की कमी है वह तो सर पर मौजूद खड़ी है परन्तु उसका कारक जो पाप करने की हालत है वह लुप्त हो गई है। अनुभव हज़ारों गवाह प्रस्तुत करता है कि पूर्ण मारिफ़त के अतिरिक्त न किसी चीज़ का प्रेम पैदा हो सकता है और न किसी चीज़ का भय उत्पन्न होता है और न उसके महत्त्व को समझा जाता है। और यह तो प्रकट है कि मनुष्य किसी कार्य या कार्य त्याग करना या तो भय के कारण करता है और या प्रेम के कारण से। और भय एवं प्रेम दोनों मारिफ़त से पैदा होते हैं। तो जब मारिफ़त नहीं तो न भय है और न प्रेम है।

हे अज़ीज़ो और प्यारो! यहां ईमानदारी की सहायता हमें इस वर्णन के लिए विवश करती है कि ख़ुदा तआला की मारिफ़त के बारे में मसीह लोगों के हाथ में कोई बात साफ़ नहीं है। वह्यी के सिलसिले पर तो पहले मुहर लग चुकी है। मसीह तथा हवारियों के बाद चमत्कार

भी बंद हो गए हैं। रही बौद्धिक पद्धति, तो मनुष्य को ख़ुदा बनाने में वह पद्धति भी हाथ से गई। और यदि पहले चमत्कार जो अब मात्र किस्सों के रूप में हैं प्रस्तुत किए जाएँ तो प्रथम तो प्रत्येक इन्कारी कह सकता है कि ख़ुदा जाने इसकी असल वास्तविकता क्या है और कितनी अतिशयोक्ति है। क्योंकि कुछ सन्देह नहीं कि अतिशयोक्ति करना इंजील लेखकों की आदत में शामिल था। अत: एक इंजील में यह वाक्य मौजूद है कि मसीह ने इतने कार्य किए कि यदि वे लिखे जाते तो संसार में समा नहीं सकते। अब देखो कि वे कार्य लिखे बिना तो संसार में समा गए, परन्तु लिखने की हालत में वे संसार में नहीं समाएंगे। यह किस प्रकार का दर्शनशास्त्र और किस प्रकार का तर्कशास्त्र है, क्या कोई समझ सकता है?

इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के चमत्कार मूसा नबी के चमत्कारों से कुछ बढ़ कर नहीं हैं और एलिया नबी के निशानों की जब मसीह के निशानों से तुलना की जाए तो एलिया नबी के चमत्कारों का पलड़ा भारी मालूम होता है। तो यदि कोई चमत्कारों से ख़ुदा बन सकता है तो ये सब बुज़ुर्ग ख़ुदाई के अधिकारी हैं। और यह बात कि मसीह ने स्वयं को ख़ुदा का बेटा कहा है यह किसी अन्य किताब में उसे बेटा कहा गया है। ऐसे लेखों से उसकी ख़ुदाई निकालना सही नहीं।

बाइबल में बहुत से लोगों को ख़ुदा के बेटे कहा गया है अपितु कुछ को ख़ुदा भी। फिर मसीह को विशिष्ट करना अकारण है और यदि ऐसा होता भी कि किसी दूसरे को उन किताबों में मसीह के अतिरिक्त ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे की उपाधि न दी जाती तब भी ऐसे

लेखों को वास्तविकता पर चरितार्थ करना मूर्खता थी। क्योंकि ख़ुदा के कलाम में ऐसे रूपक प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, परन्तु जिस हालत में बाइबल की दृष्टि से ख़ुदा का बेटा कहलाने में और भी मसीह के भागीदार हैं तो दूसरे भागीदारों को क्यों इस श्रेष्ठता से वंचित रखा जाता है?

अतः मुक्ति के लिए इस योजना पर भरोसा करना सही नहीं है और पाप से रुकने को इस योजना से कोई भी संबंध नहीं पाया जाता। अपितु दूसरे की मुक्ति के लिए आत्महत्या करना स्वयं पाप है और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कह सकता हूं कि मसीह ने अपनी ख़ुशी से सलीब को कदापि स्वीकार नहीं किया अपितु दुष्ट यहूदियों ने जो चाहा उस से किया। और मसीह ने सलीबी मौत से बचने के लिए बाग़ में सारी रात दुआ की और उसके आंसू जारी हो गए। तब ख़ुदा ने उसके संयम के कारण उसकी दुआ स्वीकार की और उसे सलीबी मौत से बचा लिया। जैसा कि स्वयं इंजील में भी लिखा है। तो यह कैसा आरोप है कि मसीह ने अपनी ख़ुशी से आत्महत्या की। इस के अतिरिक्त बुद्धि प्रस्तावित नहीं कर सकती कि ज़ैद अपने सर पर पत्थर मारे और उससे बक्र का सर दर्द जाता रहे। हाँ हम स्वीकार करते हैं कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम नबी थे और उन कामिल बन्दों में से थे जिनको ख़ुदा ने अपने हाथ से साफ़ किया है, परन्तु वे शब्द जो उनके बारे में या अन्य नबियों के बारे में पुस्तकों में आए हैं उनसे न उनको न किसी अन्य नबी को हम ख़ुदा बना सकते हैं। मैं इन बातों में स्वयं अनुभव रखता हूं और मेरे बारे में ख़ुदा तआला की पवित्र वह्यी में वे सम्मान और प्रतिष्ठा के शब्द मौजूद हैं जो मैंने

किसी इंजील में हज़रत मसीह के बारे में नहीं देखे। अब मैं क्या यह कह सकता हूं कि मैं वास्तव में ख़ुदा हूं या ख़ुदा का बेटा हूं। रही इंजील की शिक्षा। तो मेरी राय यह है कि पूर्ण शिक्षा वह होती है जो समस्त मानवीय शक्तियों का पोषण करे, न केवल यह कि मात्र एक पहलू पर अपना समस्त ज़ोर डाल दे। मैं सच-सच कहता हूं कि यह पूर्ण शिक्षा मैंने पवित्र क़ुर्आन में ही पाई है। वह हर एक बात में सच और हिकमत का ध्यान रखता चला जाता है। उदाहरणतया इंजील में कहा गया है कि एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा भी फेर दे,परन्तु पवित्र क़ुर्आन हमें शिक्षा देता है कि यह आदेश हर हाल तथा हर स्थान में नहीं बल्कि मौक़ा और स्थान देखना चाहिए कि क्या वह सब्र को चाहता है या प्रतिशोध को और क्षमा को चाहता है या दण्ड को। अब स्पष्ट है कि यही क़ुर्आन की पूर्ण शिक्षा है और इसकी पाबन्दी के बिना मानवीय सिलसिला तबाह हो जाता है और संसार की व्यवस्था बिगड़ जाती है। ऐसा ही इंजील में कहा गया है कि तू कामवासना की दृष्टि से पराई स्त्री की ओर न देख। परन्तु पवित्र क़ुर्आन में है कि न तो कामवासना की दृष्टि से न बिना कामवासना के पराई स्त्रियों को देखने की आदत न कर कि ये सब तेरे लिए ठोकर का स्थान है। चाहिए कि आवश्यकताओं के अवसर पर तेरी आंख बन्द के क़रीब हो और धुंधली सी हो और खुली-खुली दृष्टि डालने से बच कि यही तरीक़ा अन्ततः पवित्रता को सुरक्षित रखने का है। इस युग के विरोधी फ़िर्क़े शायद इस आदेश का विरोध करेंगे क्योंकि आज़ादी का नया-नया शौक़ है परन्तु अनुभव साफ़ बता रहा है कि यही आदेश सही है। दोस्तो! खुली-खुली घनिष्ठता और नज़र लड़ाने

के परिणाम कभी अच्छे नहीं निकलते। उदाहरणतया जिस हालत में अभी एक पुरुष कामवासना सबंधी भावनाओं से पवित्र नहीं और न जवान स्त्री कामवासना संबंधी भावनाओं से पवित्र है तो इन दोनों को मुलाक़ात, आंख लड़ाने और आज़ादी का अवसर देना जैसे उनको अपने हाथ से गढ़े में डालना है। ऐसा ही इंजील में कहा गया है कि व्यभिचार के बिना तलाक़ सही नहीं परन्तु पवित्र क़ुर्आन वैध रखता है कि जहां उदाहरणतया पति और पत्नी दोनों परस्पर प्राणों के दुश्मन हो जाएँ और एक की जान (प्राण) दूसरे से ख़तरे में हो और या स्त्री ने व्यभिचार तो नहीं किया परन्तु व्यभिचार की आवश्यक बातें पैदा कर ली हैं और या उसको कोई ऐसा रोग हो गया है जिस से संबंध स्थापित रखने की हालत में ख़ानदान की मौत है या ऐसा ही कोई अन्य कारण उत्पन्न हो गया है जो पति की दृष्टि में तलाक़ का कारण है तो इन सब परिस्थितियों में तलाक़ देने में पति पर कोई ऐतराज़ नहीं।

अब हम पुनः असल उद्देश्य की ओर लौटते हुए कहते है कि निस्सन्देह स्मरण रखो कि मसीही लोगों के पास मुक्ति और पाप से रुकने का कोई वास्तविक माध्यम मौजूद नहीं। क्योंकि मुक्ति के इसके अतिरिक्त कोई मायने नहीं कि मनुष्य की ऐसी हालत हो जाए कि पापों के करने पर दिलेरी न कर सके और ख़ुदा तआला का प्रेम इतनी उन्नति करे कि कामवासना संबंधी प्रेम उस पर विजयी न हो सकें। स्पष्ट है कि यह हालत पूर्ण मारिफ़त के अतिरिक्त पैदा नहीं हो सकती। अब हम जब पवित्र क़ुर्आन को देखते हैं तो इसमें खुले तौर पर वे साधन पाते हैं जिन से ख़ुदा तआला की पूर्ण मारिफ़त प्राप्त हो सके और फिर भय विजयी होकर पापों से रुक सकें। क्योंकि हम देखते

हैं कि उसके अनुकरण से ख़ुदा तआला का वार्तालाप और सम्बोधन प्राप्त हो जाता है और आकाशीय निशान प्रकट होते हैं तथा मनुष्य ख़ुदा से ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान पाता है और उससे एक सुदृढ़ संबंध पैदा हो जाता है और दिल ख़ुदा से मिलने के लिए जोश मारता है और उसे प्रत्येक चीज़ पर प्राथमिक कर लेता है और दुआएं स्वीकार होकर सूचना दी जाती है और मारिफ़त का एक दरिया जारी हो जाता है जो गुनाह से रोकता है। फिर जब हम इंजील की ओर आते हैं तो पाप से बचने के लिए उसमें केवल एक अनुचित तरीका पाते हैं जिसका पाप के निवारण से कुछ भी संबंध नहीं। विचित्र है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने इन्सानियत की कमज़ोरियाँ तो बहुत दिखलाईं और ख़ुदाई की कोई विशेष शक्ति प्रकट न हुई जो ग़ैर (अन्य) से उन्हें अन्तर देती तथापि वह मसीहियों की दृष्टि में ख़ुदा करके माने गए।

अब हम आर्य धर्म पर संक्षिप्त तौर पर दृष्टि डालते हैं कि पाप से बचने के लिए उनके धर्म में क्या सामान प्रस्तुत किया गया है। तो स्पष्ट हो कि आर्य सज्जनों के वेद मुकद्दस ने भविष्य काल के लिए ख़ुदा तआला के वार्तालाप और सम्बोधन तथा आकाशीय निशानों से सर्वथा इन्कार कर दिया है। अत: वेद में इस पूर्ण संतुष्टि को ढूंढना कि किसी को ख़ुदा के اَنَاالْمَوْجُوْدُ (मैं मौजूद हूं) की आवाज़ आए और ख़ुदा दुआओं को सुनकर उसका उत्तर दे और निशानों द्वारा अपना चेहरा दिखाए एक व्यर्थ कोशिश और निष्फल है अपितु उनके नज़दीक ये समस्त बातें असंभव हैं परन्तु साफ़ प्रकट है कि किसी चीज़ का भय या प्रेम उसके दर्शन और पूर्ण मारिफ़त के बिना संभव ही नहीं और केवल उत्पादों पर दृष्टि डालने से पूर्ण मारिफ़त हो नहीं

सकती। इसी कारण केवल बुद्धि के अनुयायियों में हज़ारों नास्तिक मत वाले भी मौजूद हैं अपितु वे लोग दर्शनशास्त्र की पूर्ण पराकाष्ठा तक पहुँचते हैं, वही हैं जिनको पूर्ण नास्तिक कहना चाहिए। अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि सद्बुद्धि अधिक से अधिक केवल इस सीमा तक काम दे सकती है कि उत्पादों पर दृष्टि डालने से बशर्ते कि नास्तिकता का रंग अपने अन्दर न रखती हो यह कह सकती है कि इन चीज़ों का कोई स्रष्टा होना चाहिए न यह कि वह स्रष्टा वास्तव में मौजूद भी है। और फिर बुद्धि ही इस भ्रम में गिरफ़्तार हो सकती है कि संभव है कि यह सब कारखाना स्वयं चला आता हो और स्वाभाविक तौर पर कुछ चीज़ें कुछ की स्रष्टा हों। तो बुद्धि उस पूर्ण विश्वास तक नहीं पहुँच सकती जिसका नाम पूर्ण मारिफ़त है जो ख़ुदा तआला के दर्शन की स्थानापन्न है और जिस से पूर्ण रूप से भय और प्रेम जन्म लेते हैं और फिर भय तथा प्रेम की अग्नि से प्रत्येक प्रकार का पाप जल जाता है और कामवासना संबंधी भावनाओं पर मृत्यु आ जाती है और एक प्रकाशमय परिवर्तन पैदा होकर समस्त आन्तरिक कमज़ोरियों और पाप की अपवित्रताएं दूर हो जाती हैं। परन्तु चूंकि प्राय: मनुष्यों को इस पूर्ण पवित्रता की परवाह नहीं है जो पाप के दाग़ से सर्वथा मुक्त करती है। इसलिए प्राय: लोग इस आवश्यकता को महसूस करके उसकी खोज में नहीं लग जाते अपितु इसके विपरीत पक्षपात से परिपूर्ण हो कर विरोध प्रकट करते हैं और लड़ने के लिए तत्पर हो जाते हैं। और आर्यों का हाल तो बहुत ही खेदजनक है कि वे पूर्ण मारिफ़त के वास्तविक माध्यम से तो बिल्कुल निराश हैं और बौद्धिक माध्यम भी उनके हाथ में नहीं रहे क्योंकि जब उनके नज़दीक संसार का

कण-कण अनादि है जो स्वयंभू है और किसी के हाथ से अस्तित्व में नहीं आया और समस्त रूहें भी अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित अनादि हैं जिन का कोई स्रष्टा नहीं तो उनके हाथ में परमेश्वर के अस्तित्व पर कौन सा तर्क शेष रहा? और यदि कहें कि संसार के कणों का परस्पर जोड़ना और रूहों का उनमें दाख़िल करना यह परमेश्वर का कार्य है और यही उसके अस्तित्व पर तर्क है तो यह समझना सही न होगा। क्योंकि जिस हालत में रूहें और कण स्वयं ऐसे शक्तिमान हैं कि अनादि काल से अपने अस्तित्व को स्वयं संभाले हुए हैं और अपने अस्तित्व के स्वयं ही ख़ुदा हैं तो क्या वे स्वयं परस्पर जोड़ना और पृथक होना नहीं कर सकते? इस बात को कोई स्वीकार नहीं करेगा कि इसके बावजूद कि समस्त कण अर्थात् परमाणु और हस्ती और अस्तित्व में किसी अन्य के मुहताज नहीं और इसके बावजूद कि समस्त रूहें अर्थात् जीव अपनी हस्ती और अस्तित्व में तथा अपनी सम्पूर्ण शक्तियों में किसी अन्य के मुहताज नहीं परन्तु फिर भी जुड़ने और अलग होने किसी अन्य के मुहताज हैं। यह एक ऐसी आस्था है कि जो नास्तिक मत वालों के लिए एक मुफ़्त का शिकार है और इस से एक आर्य बहुत शीघ्र नास्तिक मत में सम्मिलित हो सकता है और एक चालाक नास्तिक हंसी-हंसी में उसे अपने पेच में ला सकता है। मुझे बहुत अफ़सोस है और दया भी आती है कि आर्यों ने शरीअत के दोनों पहलुओं में बड़ी ग़लती खाई है अर्थात् परमेश्वर के बारे में यह आस्था स्थापित की है कि वह समस्त सृष्टि का स्रोत नहीं और न उद्‌गम समस्त वरदानों का है अपितु कण और उनकी समस्त शक्तियां तथा रूहें और उनकी समस्त शक्तियां स्वयंभू हैं और उनके

स्वभाव उसके वरदानों से वंचित हैं। फिर स्वयं सोच लें कि परमेश्वर की क्या आवश्यकता और क्यों वह उपासना का अधिकारी है तथा किस कारण से वह सर्वशक्तिमान कहलाता है और किस मार्ग और उपाय से वह पहचाना गया है। क्या कोई इसका उत्तर दे सकता है? काश हमारी हमदर्दी किसी हृदय को प्रभावित करे। काश कोई विचार करे। हे शक्तिमान ख़ुदा! उस क़ौम पर भी दया कर जो हमारी पुरानी पड़ोसी है। इन में से बहुत से दिल सच्चाई की ओर फेर दे कि तुझ में सब क़ुदरत है। आमीन।

यह पहलू तो परमेश्वर के बारे में है जिसमें उस अद्वितीय स्रष्टा के अधिकार का हनन है। और दूसरा पहलू जो आर्य मत सृष्टि (मख़्लूक़) के बारे में प्रस्तुत करता है उनमें से एक तो आवागमन है अर्थात् बार-बार रूहों के भिन्न-भिन्न प्रकार की योनियों में पड़ कर संसार में आना। इस आस्था में सर्वप्रथम यह बात अद्‌भुत और आश्चर्यजनक है कि बुद्धि के दावे के बावजूद यह समझा गया है कि परमेश्वर इतना निष्ठुर है कि एक पाप के बदले में करोड़ों वर्ष तक अपितु करोड़ों अरबों वर्ष तक दण्ड दिए जाता है। हालांकि जानता है कि उसके पैदा किए हुए नहीं हैं और उन पर उसका कोई भी अधिकार नहीं है सिवाए इसके कि बार-बार योनियों के चक्र में डालकर दु:ख में डाले। फिर क्यों इन्सानी सरकार की तरह केवल कुछ वर्ष का दण्ड नहीं देता? स्पष्ट है कि लम्बे दण्ड के लिए यह शर्त है कि दण्ड प्राप्त लोगों पर कोई लम्बा अधिकार भी हो। परन्तु जिस स्थिति में समस्त परमाणु और रूहें स्वयंभू हैं उसका उन पर कुछ भी उपकार नहीं सिवाए इसके कि दण्ड के उद्‌देश्य से भिन्न-भिन्न प्रकार की

योनियों में उनको डाले। फिर वह किस अधिकार से लम्बा दण्ड देता है। देखो इस्लाम में उसके बावजूद कि ख़ुदा फ़रमाता है कि हर एक कण और प्रत्येक आत्मा का मैं ही स्रष्टा हूँ और समस्त शक्तियाँ उनकी मेरे ही फैज़ से हैं और मेरे ही हाथ से पैदा हुए हैं और मेरे ही सहारे से जीते हैं फिर भी वह क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है

اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ (हूद-108)

अर्थात् नारकी नर्क में हमेशा रहेंगे परन्तु न वैसा हमेशा रहना जैसा ख़ुदा का रहना है बल्कि दूर की अवधि की दृष्टि से। फिर ख़ुदा की दया सहायक होगी क्योंकि वह सामर्थ्यवान है जो चाहता है करता है। इस आयत की व्याख्या में हमारे सय्यद-व-मौला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस भी है और वह यह है-

يَأْتِيْ عَلٰى جَهَنَّمَ زَمَانٌ لَيْسَ فِيْهَا اَحَدٌ وَ نَسِيْمُ الصَّبَا تُحَرِّكُ اَبْوَابَهَا

अर्थात् नर्क पर एक वह समय आएगा कि उस में कोई भी न होगा और सुबह की हवा उसके किवाड़ों को हिलाएगी। परन्तु अफ़सोस कि ये क़ौमें ख़ुदा तआला को एक ऐसा चिड़चिड़ा और वैर रखने वाला ठहराती है कि कभी भी उसका क्रोध कम नहीं होता और असंख्य अरबों तक योनियों में डालकर फिर भी पाप क्षमा नहीं करता। और ये आरोप केवल आर्य लोगों पर नहीं मसीह लोगों की भी यही आस्था है कि वे एक पाप के लिए हमेशा (अनश्वर) नर्क प्रस्तावित करते हैं जिस का कभी अन्त नहीं और साथ ही यह भी आस्था है कि ख़ुदा प्रत्येक चीज़ का स्रष्टा है। फिर जिस हालत में ख़ुदा तआला इन्सानी रूहों और उनकी सम्पूर्ण शक्तियों का स्वयं स्रष्टा है और उसने स्वयं ही कुछ तबीयतों में ऐसी कमज़ोरियाँ रख दी हैं

कि वे पाप करने वाली हो जाती हैं और एक घड़ी की भांति केवल उस सीमा तक चलती हैं जो उस वास्तविक घड़ीसाज़ ने उनके लिए निर्धारित कर दी है तो फिर वे अवश्य कुछ दया के योग्य हैं। क्योंकि उन के दोष और कमज़ोरियाँ केवल अपनी ओर से नहीं अपितु उस स्रष्टा का भी उनमें बड़ा हस्तक्षेप है जिसने उन को कमज़ोर बनाया। और यह कैसा न्याय है कि उसने अपने बेटे को दण्ड देने के लिए केवल तीन दिन निर्धारित किए परन्तु अन्य लोगों के दण्ड का आदेश अनश्वर ठहराया जिसका कभी भी अन्त नहीं और चाहा कि वे हमेशा और अनश्वर समय तक नर्क के तंदूर में जलते रहें। क्या दयालु-कृपालु ख़ुदा का ऐसा करना उचित है? अपितु चाहिए तो यह था कि अपने बेटे को अधिक दण्ड देता क्योंकि वह ख़ुदाई शक्तियों के कारण अधिक दण्ड को उठा सकता था, ख़ुदा का बेटा जो हुआ। उसकी शक्ति के साथ अन्य लोगों की शक्ति कब बराबर हो सकती है जो ग़रीब और असहाय सृष्टि हैं। अत: ईसाई लोग और आर्य लोग इस एक ही आरोप के जाल में हैं और उनके साथ कुछ मूर्ख मुसलमान भी। परन्तु मुसलमानों के धोखा खाने में ख़ुदा के कलाम का दोष नहीं, ख़ुदा ने तो खोलकर फ़रमा दिया कि यह उनका अपना दोष है और यह उसी प्रकार का दोष है जैसा कि वे अब तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जीवित ठहराते हैं और दूसरे आकाश पर बैठा रहे हैं और ख़ुदा के कलाम पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट लिखा है कि बहुत समय हुआ कि हज़रत ईसा मृत्यु पा चुके हैं और पहली रूहों में दाख़िल हो गए परन्तु ये लोग ख़ुदा की किताब के विपरीत उन के पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। फिर हम असल कलाम की ओर

ध्यान देकर कहते हैं कि आवागमन के खण्डन का दूसरा पहलू यह है कि वह वास्तविक पवित्रता के विरुद्ध है, क्योंकि जब हम प्रतिदिन देखते हैं कि किसी की मां मृत्यु पा जाती है और किसी की बहन और किसी की पोती। तो फिर इस पर क्या तर्क है कि इस आस्था को मानने वाले इस ग़लती में ग्रस्त न हो जाएँ कि ऐसे स्थान पर निकाह कर लें जहां निकाह करना वेद की दृष्टि से अवैध है। हाँ यदि प्रत्येक बच्चे के साथ उसके जन्म के समय में एक लिखित सूची भी साथ हो जिसमें वर्णन किया गया हो कि वह पहली योनि में अमुक व्यक्ति का बच्चा था तो इस स्थिति में अवैध निकाह से बच सकते थे परन्तु परमेश्वर ने ऐसा न किया मानो अवैध तरीक़े को स्वयं फैलाना चाहा। फिर इसके अतिरिक्त हमें समझ नहीं आता कि इतनी योनियों के चक्र में डालने से लाभ क्या है और जब कि मुक्ति का सम्पूर्ण आधार और निजात का ज्ञान अर्थात् ख़ुदा की मारिफ़त पर है तो यों चाहिए था कि प्रत्येक बच्चा जो दोबारा जन्म लेता उसके ज्ञान और मारिफ़त का पहला भण्डार नष्ट न होता। परन्तु स्पष्ट है कि प्रत्येक बच्चा जो पैदा होता है ख़ाली का ख़ाली संसार में आ जाता है और एक आवारा तथा बेकार खर्च करने वाले मनुष्य की तरह पहला जमा किया हुआ बर्बाद करके दरिद्र और कंगाल की तरह मुंह दिखाता है और यद्यपि उसने पवित्र वेद को हज़ार बार पढ़ा हो एक पृष्ठ भी वेद का स्मरण नहीं रहता। तो इस स्थिति में योनियों के चक्र के अनुसार मुक्ति का कोई उपाय दिखाई नहीं देता क्योंकि ज्ञान और जानकारी का भण्डार जो हज़ार संकट से प्रत्येक योनि से जमा किया जाता है वह साथ-साथ बरबाद होता रहता है न कभी सुरक्षित रहेगा और न

मुक्ति होगी। प्रथम तो आर्य लोगों के सिद्धान्तों की दृष्टि से मुक्ति ही एक सीमित मीआद थी। फिर उस पर यह संकट कि मुक्ति की पूँजी का अर्थात् ज्ञान एकत्र नहीं होने पाता। यह दुर्भाग्य रूहों का नहीं तो और क्या?

दूसरी बात जो मख़्लूक (सृष्टि) की पवित्रता के विपरीत आर्यों की आस्थाओं में सम्मिलित है वह नियोग का मामला है। मैं इस मामले को पवित्र वेद की ओर सम्बद्ध नहीं करता, अपितु इस विचार से मेरा हृदय काँपता है कि मैं इस प्रकार की बातों को वेद से सम्बद्ध करूँ। जहां तक मेरा ज्ञान और अन्तरात्मा है मैं विश्वास करता हूं कि मानवीय प्रकृति कदापि स्वीकार नहीं करेगी कि एक व्यक्ति अपनी पतिव्रता पत्नी को जो ख़ानदान और सम्मान रखती है केवल बच्चा लेने के लिए दूसरे पुरुष से सम्भोग करा दे। हालांकि उस पत्नी का पत्नी होने का संबंध अपने पति से स्थापित है और वह उसकी पत्नी कहलाती है। और न मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि स्वयं पत्नी ऐसे कृत्य पर तैयार हो, हालांकि उस का पति जीवित मौजूद है। मनुष्य तो मनुष्य है यह स्वाभिमान तो कुछ जानवरों में भी पाया जाता है कि वे अपनी मादा के बारे में ऐसा वैध नहीं रखते। मैं इस स्थान पर कोई बहस करना नहीं चाहता सर्वथा सभ्यता और विनयपूर्वक आर्यों की सेवा में निवेदन करता हूं कि यदि इस आस्था को त्याग दें तो बहुत अच्छा होगा। यह देश पहले से ही वास्तविक पवित्रता के स्थान से बहुत नीचे है, फिर यदि स्त्रियों और पुरुषों में ऐसी-ऐसी बातें भी रिवाज पा गईं तो मालूम नहीं कि इस देश का क्या अंजाम होगा। साथ ही मैं एक और निवेदन करने का साहस करता हूं कि यद्यपि आर्य लोगों को इस

युग में मुसलमानों से कैसी ही नफ़रत है और इस्लाम की आस्थाओं से कैसी ही विमुखता है परन्तु ख़ुदा के लिए पर्दे की रस्म को पूर्णतया न छोड़ दें कि इसमें बहुत सी ख़राबियाँ हैं जो बाद में मालूम होंगी। यह बात प्रत्येक बुद्धिमान इन्सान समझ सकता है कि मनुष्यों का एक बड़ा भाग तामसिक वृत्ति के अधीन चल रहा है और वे अपने नफ़्स के ऐसे काबू में हैं कि उसके जोशों के समय ख़ुदा तआला के दण्ड का कुछ भी ध्यान नहीं रखते। जवान और सुन्दर स्त्रियों को देख कर बुरी नज़र डालने से नहीं रुकते और इसी प्रकार बहुत सी स्त्रियां हैं जो खराब दिल से पराए पुरुषों की ओर निगाहें डालती हैं। और जब दोनों सदस्यों को उनकी इस ख़राब हालत में होने के बावजूद पूर्ण आज़ादी दी जाए तो निस्सन्देह उनका वही अंजाम होगा जैसा कि यूरोप के कुछ भागों से प्रकट है। हाँ जब ये लोग वास्तव में पवित्र हृदय हो जाएंगे और उनकी तामसिकता जाती रहेगी और शैतानी रूह निकल जाएगी और उनकी आँखों में ख़ुदा का भय पैदा हो जाएगा और इनके दिलों में ख़ुदा की श्रेष्ठता स्थापित हो जाएगी और वह एक पवित्र परिवर्तन कर लेंगे और ख़ुदा के भय का एक पवित्र चोला पहन लेंगे तब जो चाहें करें क्योंकि उस समय वे ख़ुदा के हाथ के दास होंगे जैसे वे पुरुष नहीं हैं और उनकी आंखें इस बात से अंधी होंगी कि ना मुहरम औरत को बुरी नज़र से देख सकें या ऐसा बुरा विचार दिल में ला सकें। परन्तु हे प्यारो! ख़ुदा स्वयं तुम्हारे हृदयों में इल्हाम करे। अभी वह समय नहीं कि तुम ऐसा करो और यदि ऐसा करोगे तो एक ज़हरीला बीज क़ौम में फैलाओगे। यह युग एक ऐसा नाज़ुक युग है कि किसी युग में पर्दे की रस्म न होती तो इस युग

में अवश्य होना चाहिए थी क्योंकि कलयुग है और पृथ्वी पर बुराई, पाप, व्यभिचार, मदिरापन का ज़ोर है और हृदयों में नास्तिकता के विचार फैल रहे हैं और ख़ुदा तआला के आदेशों की श्रेष्ठता हृदयों से समाप्त हो गयी है। जीभों पर सब कुछ है और लेक्चर भी तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र से भरे हुए हैं परन्तु हृदय रूहानियत (आध्यात्मिकता) से रिक्त हैं। ऐसे समय में कब उचित है कि अपनी ग़रीब बकरियों को भेड़ियों के वनों में छोड़ी जाए।

हे मित्रो! अब ताऊन सर पर है और जहां तक मुझे ख़ुदा तआला से जानकारी दी गई है अभी इसका बहुत सा भाग शेष है। बहुत ख़तरनाक दिन हैं। मालूम नहीं कि अगली मई तक कौन जीवित होगा और कौन मर जाएगा तथा किस के घर पर बला आएगी और किस को बचाया जाएगा। अत: उठो! और तौब: करो तथा अपने मालिक को नेक कामों से प्रसन्न करो और स्मरण रखो कि आस्थागत ग़लतियों का दण्ड तो मरने के बाद है और हिन्दू, ईसाई या मुसलमान होने का निर्णय तो क़यामत के दिन होगा। परन्तु जो व्यक्ति अन्याय, अत्याचार, पाप और व्यभिचार में सीमा से बढ़ता है उसे उसी स्थान पर दण्ड दिया जाता है। तब वह ख़ुदा के दण्ड से किसी प्रकार भाग नहीं सकता। इसलिए अपने ख़ुदा को शीघ्र प्रसन्न कर लो और इस से पूर्व कि वह दिन आए जो भयावह दिन है। अर्थात् ताऊन के ज़ोर का दिन जिसकी नबियों ने ख़बर दी है। तुम ख़ुदा से मैत्री कर लो, वह अत्यन्त कृपालु है। वह एक पल की पिघलाने वाले तौब: से सत्तर वर्ष के पाप क्षमा कर सकता है। यह मत कहो कि तौब: स्वीकार नहीं होती। स्मरण रखो कि तुम अपने

कर्मों से कभी भाग नहीं सकते, हमेशा फज़ल (कृपा) बचाता है न कि कर्म। हे दयालु-कृपालु ख़ुदा! हम सब पर कृपा कर कि हम तेरे बन्दे और तेरी चौखट पर गिरे हैं।

आमीन।

लेक्चर का द्वितीय भाग

हे सम्माननीय श्रोताओ! अब मैं अपने दावे के बारे में जो मैंने इस देश में प्रकाशित किया है आप की सेवा में कुछ वर्णन करूंगा। यह बात अक़्ल और नक़्ल से सिद्ध है कि जब संसार में पाप का अंधकार विजयी हो जाता है और पृथ्वी पर हर प्रकार की बुराई और व्यभिचार फैल जाता है और रूहानियत कम हो जाती है और पृथ्वी पापों से अपवित्र होकर तथा ख़ुदा तआला का प्रेम ठण्डा होकर एक विषैली वायु चलने लगती है तो उस समय ख़ुदा की दया चाहती है कि पृथ्वी को दोबारा जीवित करे जिस प्रकार भौतिक मौसमों को देखते हो कि हमेशा परिवर्तित होते रहते हैं। एक समय पतझड़ होता है कि उसमें वृक्षों के फूलों और फलों तथा पत्तों पर विपदा आती है और वृक्ष ऐसे कुरूप हो जाते हैं जैसे कोई यक्ष्मा से अत्यन्त कमज़ोर हो जाता है और उसमें खून का लक्षण नहीं रहता और चेहरे पर मुर्दापन के लक्षण प्रकट हो जाते हैं या जैसे किसी कोढ़ी का कोढ़ चरम सीमा पर पहुँच कर अवयव गिरने लग जाते हैं। फिर वृक्षों पर दूसरा समय वह आने लगता है जिसे बहार (बसंत ऋतु) का मौसम कहते हैं। इस मौसम में वृक्षों के रूप दूसरा रंग लेते हैं और फल-फूल और मनमोहक और हरे-भरे पत्ते प्रकट हो जाते हैं। यही हालत

मानव जाति की है कि अंधकार और प्रकाश उन पर बारी-बारी आते रहते हैं। किसी सदी में वह पतझड़ के मौसम की तरह इन्सानी खूबी के सौन्दर्य से वंचित हो जाते हैं तथा किसी समय उन पर आकाश से ऐसी वायु चलती है कि उनके हृदयों में बसंत ऋतु पैदा होने लगती है। जब से दुनिया पैदा हुई है यही दोनों मौसम मनुष्य के साथ संलग्न रहे हैं। तो यह युग भी जिसमें हम हैं बसन्त के प्रारम्भ का युग है। पंजाब पर पतझड़ का युग उस समय ज़ोर पर था जिस समय इस देश पर ख़ालिसा क़ौम शासक थी। क्योंकि ज्ञान नहीं रहा था और देश में अज्ञानता बहुत फैल गई थी और धार्मिक पुस्तकें ऐसी गुम हो गई थीं कि शायद किसी बड़े खानदान में उपलब्ध हो सकती होंगी। तत्पश्चात अंग्रेज़ी सरकार का युग आया। यह युग नितान्त शान्तिपूर्ण है और सच तो यह है कि यदि हम ख़ालिसा क़ौम के शासन के दिनों को सामान्य अमन और आराम की दृष्टि से अंग्रेज़ी शासन की रातों से भी समान ठहरा दें तो यह भी एक अन्याय और वास्तविकता के विरुद्ध होगा। यह युग आध्यात्मिक और भौतिक बरकतों का संग्रह है और आने वाली बरकतें इसके प्रारम्भिक बसन्त से प्रकट हैं। यह युग एक विचित्र जानवर की तरह बहुमुखी है। कुछ मुंह तो वास्तविक ख़ुदा को पहचानने और ईमानदारी के विपरीत होने के कारण भयावह हैं और कुछ मुंह बहुत मुबारक और ईमानदारी के समर्थक हैं। किन्तु इस में कुछ सन्देह नहीं कि अंग्रेज़ी सरकार ने नाना प्रकार की विद्याओं को इस देश में बहुत उन्नति दी है और पुस्तकों को छापने और प्रसारित करने के लिए ऐसे सरल और आसान साधन निकल आए हैं कि पहले युग में उनका कहीं उदाहरण नहीं मिलता। और जो हज़ारों गुप्त

पुस्तकालय इस देश में थे वे भी प्रकट हो गए और थोड़े ही दिनों में ज्ञान के रंग में युग ऐसा बदल गया कि जैसे एक नई क़ौम पैदा हो गई। यह सब कुछ हुआ परन्तु क्रियात्मक हालतें दिन-प्रतिदिन समाप्त होती गईं और अन्दर ही अन्दर नास्तिकता का पौधा बढ़ने लगा। अंग्रेज़ी सरकार के उपकार में कुछ सन्देह नहीं। अपनी प्रजा पर इतना उपकार और न्याय किया और जगह-जगह अमन स्थापित किया कि इसका उदाहरण अन्य सरकारों में तलाश करना व्यर्थ है। परन्तु वह स्वतंत्रता जो अमन का दायरा पूर्ण रूप से विस्तृत करने के लिए प्रजा को दी गई वह प्राय: लोगों को पच नहीं सकी। और उसके बदले में जो ख़ुदा और सरकार का कृतज्ञ होना चाहिए था इसके स्थान पर प्राय: हृदयों में इतनी लापरवाही, दुनिया परस्ती, दुनिया की चाहत और गफ़लत बढ़ गई कि जैसे यह समझा गया कि दुनिया ही हमारे लिए हमेशा रहने का स्थान है और जैसे कि हम पर किसी का भी उपकार नहीं और न किसी की हुकूमत है। और जैसा कि नियम है कि पाप प्राय: अमन की हालत में ही पैदा होते हैं।

इसी प्रकृति के नियमानुसार गुनाहों की संख्या भी बढ़ती गई। अत: अनुदारता और लापरवाही के कारण इस देश की वर्तमान हालत अत्यन्त ख़तरनाक हो गई है। असभ्य और दुष्ट लोग जो वहशियों के समान हैं वे लज्जाजनक अपराध उदाहरणतया सेंध लगाना, व्यभिचार करना और अकारण क़त्ल इत्यादि जघन्य अपराधों को करने में व्यस्त हैं और दूसरे लोग अपनी-अपनी तबियत और नफ़्स के जोश के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्य पाप कर रहे हैं। अत: मदिरालय, दूसरी दुकानों से अधिक आबाद मालूम होते हैं। और अन्य पाप एवं

दुराचार के पेशे भी दिन-प्रतिदिन प्रगति में हैं। उपासना गृह केवल रस्म अदा करने के लिए ठहर गए हैं। निष्कर्ष यह कि पृथ्वी पर पापों का एक प्रचंड जोश है और प्राय: लोगों की कामवासना संबंधी इच्छाएं पूर्ण अमन और पूर्ण आराम के कारण इतने जोश में आ गई हैं कि जैसे जब एक तीव्र दरिया का बाँध टूट जाए तो वह एक रात में ही आस-पास के समस्त देहात को तबाह कर देता है। कुछ सन्देह नहीं कि दुनिया में एक अत्यन्त विशाल स्तर पर अन्धकार पैदा हो गया है और ऐसा समय आ गया है कि या तो ख़ुदा दुनिया में कोई प्रकाश पैदा करे या दुनिया को तबाह कर दे। परन्तु अभी इस दुनिया के तबाह होने में एक हज़ार वर्ष शेष हैं और दुनिया की सजावट, आराम और ऐश्वर्य के लिए पृथ्वी पर जो नए-नए उद्यम पैदा हुए हैं यह परिवर्तन भी स्पष्ट तौर पर बता रहा है कि जैसे ख़ुदा तआला ने भौतिक तौर पर सुधार किया है वह आध्यात्मिक (रूहानी) तौर पर भी मानव जाति का सुधार और उन्नति चाहता है। क्योंकि मनुष्यों की रूहानी हालत भौतिक हालत से अधिक गिर गई है। और ऐसे ख़तरनाक पड़ाव पर आ पहुँची है कि जहां मानव-जाति ख़ुदा के प्रकोप का निशाना बन सकती है। प्रत्येक पाप का जोश बहुत ही उन्नति पर पाया जाता है और रूहानी शक्तियां अत्यन्त कमज़ोर हो गई हैं और ईमानी प्रकाश बुझ गए हैं तथा अब सद्बुद्धि स्पष्ट तौर पर इस बात की आवश्यकता को स्वीकार करती है कि इस अन्धकार के प्रभुत्व पर आकाश से कोई प्रकाश उत्पन्न होना चाहिए। क्योंकि जैसे भौतिक तौर पर पृथ्वी के अंधकार का दूर होना अनादि काल से इस बात पर निर्भर है कि पृथ्वी पर आकाशीय प्रकाश पड़े। ऐसा ही रूहानी तौर पर भी यह

प्रकाश केवल आकाश से ही उतरता और हृदयों को प्रकाशमान करता है। जब से कि ख़ुदा ने मनुष्य को बनाया है उसकी प्रकृति का नियम यह देखा गया है कि वह मानव जाति में एक प्रकार की एकता पैदा करने के लिए उनमें से एक व्यक्ति पर आवश्यकता के समय अपनी पूर्ण मारिफ़त का प्रकाश डालता है और उसे अपने वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मानित करता है और अपने पूर्ण प्रेम का जाम उसे पिलाता है तथा उसे अपने प्रिय मार्ग की पूर्ण प्रतिभा प्रदान करता है और उसके हृदय में जोश डालता है ताकि वह दूसरों को भी उस प्रकाश और प्रतिभा तथा प्रेम की ओर आकर्षित करे जो उसको प्रदान की गई है। और इस प्रकार से शेष लोग उस से संबंध पैदा करके और उसी के अस्तित्व में सम्मिलित होकर तथा उसकी मारिफ़त से हिस्सा लेकर पापों से बचते और तक़्वा-व-पवित्रता में उन्नति करते हैं। इसी अनश्वर कानून की दृष्टि से ख़ुदा ने अपने पवित्र नबियों के माध्यम से यह सूचना दी है कि जब आदम के समय से छ: हज़ार वर्ष समाप्त होने के निकट हो जाएँगे तो पृथ्वी पर बहुत अन्धकार फैल जाएगा और पापों का सैलाब बड़े ज़ोर से बहने लगेगा और ख़ुदा का प्रेम हृदयों में बहुत कम और बिल्कुल समाप्त हो जाएगा। तब ख़ुदा केवल आकाश से ज़मीन के सामानों के बिना आदम की तरह अपनी ओर से रूहानी तौर पर एक व्यक्ति में सच्चाई, प्रेम और मारिफ़त की रूह फूंकेगा और वह मसीह भी कहलाएगा। क्योंकि ख़ुदा अपने हाथ से उसकी रूह अपने व्यक्तिगत प्रेम का इत्र मलेगा और वह वादे का मसीह जिसे दूसरे शब्दों में ख़ुदा की किताबों में मसीह मौऊद भी कहा गया है शैतान के मुक़ाबले पर खड़ा किया जायेगा और शैतानी

सेना तथा मसीह में यह अन्तिम युद्ध होगा और शैतान अपनी समस्त शक्तियों के साथ तथा समस्त संतान के साथ और समस्त उपायों के साथ उस दिन उस रूहानी युद्ध के लिए तैयार होकर आयेगा।

संसार में बुराई और अच्छाई में ऐसा युद्ध कभी नहीं हुआ होगा जैसा कि उस दिन होगा। क्योंकि उस दिन शैतान के यत्न और शैतानी विद्याएँ चरम सीमा तक पहुँच जाएँगी। और जिन समस्त उपायों से शैतान पथभ्रष्ट कर सकता है वे समस्त उपाय उस दिन उपलब्ध हो जायेंगे तब घोर युद्ध के पश्चात् जो एक रूहानी युद्ध है ख़ुदा के मसीह की विजय होगी और शैतानी शक्तियां नष्ट हो जाएँगी एक समय तक ख़ुदा का प्रताप, श्रेष्ठता, पवित्रता और तौहीद (एकेश्वरवाद) पृथ्वी पर फैलती जाएगी और वह समय पूरा एक हज़ार वर्ष है जो सातवाँ दिन कहलाता है तत्पश्चात दुनिया का अन्त हो जायेगा अतः वह मसीह मैं हूँ यदि कोई चाहे तो स्वीकार करे। यहाँ कुछ फ़िर्के जो शैतान के अस्तित्व के इनकारी हैं वे आश्चर्य करेंगे कि शैतान क्या चीज़ है। तो उनको स्मरण रहे कि मनुष्य के हृदय के साथ दो आकर्षण हर समय बारी-बारी लगे रहते हैं एक आकर्षण अच्छाई (भलाई) का और एक आकर्षण बुराई का। तो जो भलाई का आकर्षण है इस्लामी शरीअत उसे फ़रिश्ते की ओर सम्बद्ध करती है और जो आकर्षण बुराई का है उसे इस्लामी शरीअत शैतान की ओर सम्बद्ध करती है। और उद्देश्य केवल इतना है कि मानव प्रकृति में दो आकर्षण मौजूद हैं। कभी मनुष्य नेकी की ओर झुकता है और कभी बुराई की ओर। मेरा विचार है कि इस जलसे में बहुत से ऐसे लोग भी होंगे जो मेरे इस वर्णन को कि मैं मसीह मौऊद हूँ और ख़ुदा से वार्तालाप एवं संबोधन का

सम्मान रखता हूँ इन्कार की दृष्टि से देखेंगे और तिरस्कार पूर्ण नज़र से मेरी ओर देखेंगे परन्तु उन्हें असमर्थ समझता हूँ क्योंकि प्रारम्भ से ऐसा ही होता आया है कि पहले ख़ुदा के मामूरों और मुर्सलों को हृदय को कष्ट देने वाली बातें सुननी पड़ती हैं। नबी अपमानित नहीं परन्तु अपने प्रारंभिक काल में वह नबी, रसूल,किताब वाला और शरीअत वाला जिसकी उम्मत कहलाने का हम सब को गर्व है और जिस की शरीअत पर सब शरीअतों का अन्त है उसके जीवन-चरित्र की ओर निगाह करो कि जिस प्रकार तेरह वर्ष तक मक्का में अकेले और ग़रीबी तथा विवशता की अवस्था में इन्कारियों द्वारा कष्ट उठाये और क्योंकर तिरस्कार, हंसी, ठठ्ठे का लक्ष्य बने रहे और अन्त में मक्का से बड़े अन्याय और अत्याचारपूर्वक निकाले गए। किस को खबर थी कि अन्ततः वह करोड़ों मनुष्यों का इमाम और पेशवा बनाया जायेगा। अतः यही ख़ुदा की सुन्नत है कि ख़ुदा के मनोनीत लोग प्रथम तिरस्कृत और तुच्छ समझे जाते हैं और ऐसे लोग थोड़े हैं कि प्रारम्भ में ख़ुदा के भेजे हुए लोगों को पहचान सकते हैं और अवश्य है कि वे मूर्ख लोगों के हाथों से कष्ट उठायें और उनके बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें कही जाएँ और हंसी, ठट्ठा किया जाए , ग़ालियां दी जाएं, जब तक कि वह समय आये कि उनके स्वीकार करने के लिए ख़ुदा दिलों को खोल दे। यह तो मेरा दावा है जो मैंने वर्णन किया। परन्तु वह कार्य जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर किया है वह यह है कि ख़ुदा में और उसकी प्रजा के रिश्ते में जो मलिनता आ गयी है उसे दूर करके प्रेम और निकटता के संबंध को दोबारा स्थापित करूं और सच्चाई की अभिव्यक्ति से धार्मिक युद्धों को समाप्त करके सुलह

की बुनियाद डालूँ। और वे धार्मिक सच्चाइयां जो संसार की आंख से छुप गयी हैं उनको प्रकट करूँ और वह रूहानियत जो कामवासना संबंधी अंधकारों के नीचे दब गयी हैं उसका नमूना दिखाऊँ और ख़ुदा की शक्तियां जो मनुष्य के अन्दर प्रवेश करके ध्यान या दुआ के द्वारा प्रकट होती हैं व्यवहारिक रूप से न केवल कथन के द्वारा उनका हाल वर्णन करना और सब से अधिक यह कि वह शुद्ध और चमकती हुई तौहीद (एकेश्वरवाद) जो हर प्रकार के शिर्क की मिलावट से खाली है जो अब मिट चुकी है उसका क़ौम में दोबारा पौधा लगा दूं। और यह सब कुछ मेरी शक्ति से नहीं होगा अपितु उस ख़ुदा की शक्ति से होगा जो आकाश और पृथ्वी का ख़ुदा है। मैं देखता हूं कि एक ओर तो ख़ुदा ने अपने हाथ से मेरी तर्बियत (प्रशिक्षण) करके और मुझे अपनी वह्यी से सम्मानित करके मेरे हृदय को यह जोश प्रदान किया है कि मैं इस प्रकार के सुधारों के लिए खड़ा हो जाऊं और दूसरी ओर उसने हृदय भी तैयार कर दिए हैं जो मेरी बातें मानने के लिए तैयार हों। मैं देखता हूं कि जब से ख़ुदा ने मुझे संसार में मामूर करके भेजा है उसी समय से संसार में एक महान क्रान्ति आ रही है। यूरोप और अमरीका में जो लोग हज़रत ईसा की ख़ुदाई पर मुग्ध थे अब उनके अन्वेषक स्वयं इस आस्था से पृथक होते जाते हैं और वह क़ौम जो बाप-दादों से मूर्तियों और देवताओं पर मोहित थी उनमें से बहुत से लोगों को यह बात समझ में आ गई है कि मूर्तियाँ कुछ चीज़ नहीं हैं। और यद्यपि वे लोग अभी रूहानियत से अपरिचित हैं और केवल कुछ शब्दों को रस्मी तौर पर लिए बैठे हैं परन्तु कुछ सन्देह नहीं कि उन्होंने हज़ारों व्यर्थ रस्मों, बिदअतों और शिर्क की

रस्सियों को अपने गले से उतार दिया है और एकेश्वरवाद की ड्योढ़ी के क़रीब खड़े हो गए हैं। मैं आशा करता हूं कि कुछ थोड़े समय के पश्चात् ख़ुदा की अनुकम्पा उनमें से बहुत से लोगों को अपने एक विशेष हाथ से धक्का देकर सच्ची और पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के उस दारुल अमन (शांति-स्थल) में दाख़िल कर देगी जिसके साथ पूर्ण प्रेम, पूर्ण भय और पूर्ण मारिफ़त प्रदान की जाती है। मेरी यह आशा मात्र काल्पनिक नहीं है अपितु ख़ुदा की पवित्र वह्यी से मुझे यह ख़ुशख़बरी मिली है। इस देश में खुदा की हिकमत ने यह कार्य किया है ताकि शीघ्र ही विभिन्न क़ौमों को एक क़ौम बना दे और सुलह तथा शांति का दिन लाए। प्रत्येक को इस हवा की सुगंध आ रही है कि ये समस्त बिखरी हुई क़ौमें किसी दिन एक क़ौम बनने वाली है। इसलिए मसीही लोग यह विचार प्रकाशित कर रहे हैं कि शीघ्र ही सम्पूर्ण विश्व का यही धर्म हो जाएगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा करके मान लेंगे और यहूदी जो बनी इस्राईल कहलाते हैं उनको भी इन दिनों में नया जोश पैदा हो गया है कि उनका एक विशेष मसीह जो उनको समस्त पृथ्वी का वारिस बना देगा इन्हीं दिनों में आने वाला है। ऐसा ही इस्लाम की भविष्यवाणियां भी जो एक मसीह का वादा देती हैं उनके वादे का दिन भी हिजरत की चौदहवीं सदी तक ही समाप्त होता है। और सामान्य मुसलमानों का भी विचार है कि ऐसा समय क़रीब है कि जब समस्त पृथ्वी पर इस्लाम फैल जाएगा और सनातन धर्म के कुछ पंडितों से मैंने सुना है कि वे भी अपने एक अवतार के प्रकट होने का समय इसी समय को बताते हैं और कहते हैं कि वह अन्तिम अवतार है जिससे समस्त पृथ्वी पर

धर्म फैल जाएगा। और आर्य लोग किसी भविष्यवाणी को मानते तो नहीं तथापि उस हवा के प्रभाव से जो चल रही है वे भी साहस और प्रयास कर रहे हैं कि एशिया, यूरोप, अमरीका तथा जापान इत्यादि देशों में उन्हीं का धर्म फैल जाए। और विचित्रतम यह कि बौद्ध धर्म वालों में भी नए सिरे से यही जोश पैदा हो गया है और प्राय: हंसी की बात यह है कि इस देश के चूहड़े अर्थात् भंगी भी इस चिन्ता में पड़ गए हैं कि किसी प्रकार वे अन्य क़ौमों की चोट और लूट-मार से बचें और उनको भी कम से कम अपने धर्म की सुरक्षा की एक शक्ति प्राप्त हो जाए। अत: इस युग में एक ऐसी हवा चल पड़ी है कि प्रत्येक फ़िर्क़ा (समुदाय) अपनी क़ौम और अपनी उन्नति का बड़े जोश से इच्छुक हैं तथा चाहते हैं कि अन्य क़ौमों का नामो-निशान न रहे। जो कुछ हों वही हों, और जिस प्रकार समुद्र की मौजों के समय एक मौज दूसरी मौज पर पड़ती है इसी प्रकार विभिन्न धर्म एक-दूसरे पर आक्रमण कर रहे हैं। बहरहाल इन तहरीकों से महसूस हो रहा है कि यह युग वही युग है जिसमें ख़ुदा तआला ने इरादा किया है कि विभिन्न फ़िर्क़ों को एक क़ौम बना दे और इन धार्मिक झगड़ों को समाप्त कर दे। और इसी युग के संबंध में जो मौजों की बाढ़ का युग है ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया है-

وَّنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَجَمَعۡنٰهُمۡ جَمۡعًا ۙ (अल कहफ़-100)

इस आयत को पहली आयतों के साथ मिलाकर अर्थ ये हैं कि जिस युग में दुनिया के धर्मों का बहुत शोर उठेगा और एक धर्म दूसरे धर्म पर ऐसा पड़ेगा जैसा कि एक मौज दूसरी मौज पर पड़ती है और एक दूसरे को मार डालना चाहेंगे। तब आकाश और पृथ्वी का ख़ुदा

इस बाढ़ की मौजों के युग में अपने हाथों से सांसारिक सामानों के बिना एक नया सिलसिला पैदा करेगा और उसमें उन सब को जमा करेगा जो योग्यता और अनुकूलता रखते हैं। तब वे समझेंगे कि धर्म क्या वस्तु है और उनमें जीवन तथा वास्तविक ईमानदारी की रूह फूंकी जाएगी और उनको ख़ुदा की मारिफ़त का जाम पिलाया जाएगा तथा अवश्य है कि दुनिया का यह सिलसिला समाप्त न हो। जब तक कि यह भविष्यवाणी आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व पवित्र क़ुर्आन ने दुनिया में प्रकाशित की हैं पूर्ण न हो जाए। और ख़ुदा ने इस युग के बारे में जिसमें समस्त क़ौमें एक ही धर्म पर जमा की जाएंगी, केवल एक ही निशान वर्णन नहीं किया अपितु पवित्र क़ुर्आन में और भी कई निशान लिखे हैं। उन सब में से एक यह कि उस युग में दरियाओं से बहुत सी नहरें निकलेंगी और एक यह कि पृथ्वी की गुप्त खानें अर्थात् बहुत सी खानें निकल आएंगी और बहुत सी पार्थिव विद्याएं प्रकट हो जाएंगी और एक यह कि ऐसे सामान पैदा हो जाएंगे जिन के द्वारा पुस्तकें बड़ी प्रचुरता में हो जाएंगी (यह छापने के उपकरणों की ओर संकेत है) और एक यह कि उन दिनों में एक ऐसी सवारी पैदा हो जाएगी जो ऊँटों को बेकार कर देगी तथा उसके माध्यम से मुलाक़ातों के मार्ग आसान हो जाएंगे। और एक यह कि संसार के पारस्परिक संबंध आसान हो जाएंगे तथा एक दूसरे को सरलतापूर्वक सूचनाएं पहुँचा सकेंगे, और एक यह कि उन दिनों में आकाश पर एक ही महीने में चन्द्रमा और सूर्य को ग्रहण लगेगा तथा एक यह इसके बाद पृथ्वी पर भयंकर ताऊन फैलेगी, यहां तक कि कोई शहर और कोई गांव ख़ाली न रहेगा जो ताऊन से ग्रस्त न हो और दुनिया

में बहुत मौत पड़ेगी और दुनिया वीरान हो जाएगी। कुछ बस्तियां तो बिल्कुल नष्ट हो जाएंगी और उनका नामो निशान न रहेगा तथा कुछ बस्तियां एक सीमा तक अज़ाब में गिरफ़्तार होकर फिर उनको बचाया जाएगा। ये दिन ख़ुदा के कठोर प्रकोप के दिन होंगे। इसलिए कि लोगों ने ख़ुदा के निशानों को जो उसके भेजे हुए के लिए इस युग में प्रकट हुए स्वीकार न किया और ख़ुदा के नबी को जो मख़्लूक के सुधार के लिए आया अस्वीकार कर दिया और उसे झूठा ठहरा दिया। ये समस्त निशानियां इस युग में पूरी हो गईं। बुद्धिमान के लिए साफ़ और स्पष्ट मार्ग है कि ऐसे समय में ख़ुदा ने मुझे अवतरित किया जबकि पवित्र क़ुर्आन की लिखी हुई समस्त निशानियां मेरे प्रादुर्भाव के लिए प्रकट हो चुकी हैं। ये समस्त निशानियां जो मसीह मौऊद के युग के बारे में हैं यद्यपि हदीसों में भी पाई जाती हैं, परन्तु इस स्थान पर मैंने केवल पवित्र क़ुर्आन को प्रस्तुत किया है तथा पवित्र क़ुर्आन ने एक अन्य निशानी मसीह मौऊद के युग के लिए ठहराई है। एक स्थान पर फ़रमाता है-

اِنَّ يَوۡمًا عِنۡدَ رَبِّكَ كَاَلۡفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ (अल हज्ज-48)

अर्थात् एक दिन ख़ुदा का ऐसा है जैसा तुम्हारा हज़ार वर्ष हो। तो चूंकि दिन सात हैं इसलिए इस आयत में दुनिया की आयु सात हज़ार वर्ष ठहरा दी गई है। किन्तु यह आयु उस आदम के युग से है जिसकी हम सन्तान हैं। ख़ुदा के कलाम से मालूम होता है कि इस से पहले भी दुनिया थी। हम नहीं कह सकते कि वे लोग कौन थे और किस प्रकार के थे। मालूम होता है कि सात हज़ार वर्ष में दुनिया का एक दौर समाप्त होता है। इसी कारण तथा इसी बात पर निशान ठहराने

के लिए दुनिया में सात दिन निर्धारित किए गए ताकि प्रत्येक दिन एक हज़ार वर्ष को बताए। हमें मालूम नहीं कि दुनिया पर इस प्रकार से कितने दौर गुज़र चुके हैं और कितने आदम अपने-अपने समय में आ चुके हैं। चूंकि ख़ुदा अनादि काल से स्रष्टा है, इसलिए हम मानते तथा ईमान लाते हैं कि दुनिया अपनी प्रजाति की दृष्टि से अनादि नहीं है। परन्तु अपने शख़्स की दृष्टि से अनादि नहीं है अफ़सोस कि ईसाई लोग यह आस्था रखते हैं कि केवल छः हज़ार वर्ष हुए कि जब ख़ुदा ने दुनिया को पैदा किया और पृथ्वी तथा आकाश बनाए और इस से पहले ख़ुदा हमेशा के लिए निलंबित और बेकार था और अनादि तौर पर निलंबित चला आ रहा था। यह ऐसी आस्था है कि कोई बुद्धिमान इसे स्वीकार नहीं करेगा, परन्तु हमारी आस्था जो पवित्र क़ुर्आन ने हमें सिखाई है कि ख़ुदा हमेशा से स्रष्टा है, यदि चाहे तो करोड़ों बार पृथ्वी और आकाश को फ़ना करके पुनः ऐसे ही बना दे। और उसने हमें ख़बर दी है कि वह आदम जो पहली उम्मतों के बाद आया जो हम सब का पिता था उसके दुनिया में आने के समय से यह इन्सानों का सिलसिला आरंभ होता है और इस सिलसिले की आयु का पूरा दौर सात हज़ार वर्ष तक है। यह सात हज़ार ख़ुदा के नज़दीक ऐसे हैं जैसे इंसानों के सात दिन। स्मरण रहे कि ख़ुदा के क़ानून ने निर्धारित किया है कि प्रत्येक उम्मत के लिए सात हज़ार वर्ष का दौर होता है। इसी दौर की ओर संकेत करने के लिए इन्सानों में सात दिन निर्धारित किए गए हैं। इसलिए बनी आदम की आयु का दौर सात हज़ार वर्ष निर्धारित है। और इसमें से हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काल में पांच हज़ार वर्ष के लगभग गुज़र चुके

थे या शब्दों के परिवर्तन के साथ यों कहो कि ख़ुदा के दिनों में से पांच दिन के लगभग गुज़र चुके थे जैसा कि सूरह 'वलअस्र' में अर्थात् उसके अक्षरों में अबजद की दृष्टि से पवित्र क़ुर्आन में संकेत कर दिया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में जब वह सूरह उतरी तब आदम के युग पर उतनी ही अवधि गुज़र चुकी थी जो कथित सूरह की संख्या से प्रकट है। इस युग में से छः हज़ार वर्ष गुज़र चुके हैं तथा एक हज़ार वर्ष शेष हैं। पवित्र क़ुर्आन में अपितु अधिकतर पहली किताबों में भी यह लेखपत्र मौजूद है कि वह अन्तिम मुर्सल जो आदम के रूप में आएगा और मसीह के नाम से पुकारा जाएगा अवश्य है कि वह छठे हज़ार के अन्त में पैदा हो जैसा कि आदम छठे दिन के अन्त में पैदा हुआ। ये समस्त निशान ऐसे हैं जो सोच-विचार करने वाले के लिए पर्याप्त हैं। और इन सात हज़ार वर्ष का पवित्र क़ुर्आन तथा ख़ुदा की अन्य किताबों की दृष्टि से विभाजन यह है कि पहला हज़ार नेकी और हिदायत के फैलने का युग है। और दूसरा हज़ार शैतान के अधिकार का युग है और फिर तीसरा हज़ार नेकी और हिदायत के फैलने का और चौथा हज़ार शैतान के अधिकार का और फिर पांचवां हज़ार नेकी और हिदायत के फैलने का (यही वह हज़ार है जिसमें हमारे सय्यद-व-मौला ख़तमी पनाह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया के सुधार के लिए अवतरित हुए और शैतान कैद किया गया) और फिर छठा हज़ार शैतान के खुलने तथा कब्ज़ा होने का युग है जो तीन सदियों के बाद आरम्भ होता है और चौदहवीं सदी के सर पर समाप्त हो जाता है। और फिर सातवां हज़ार ख़ुदा और उसके मसीह का तथा

प्रत्येक भलाई और बरकत, ईमान, सलाह, संयम, एकेश्वरवाद, ख़ुदा की उपासना, प्रत्येक प्रकार की नेकी तथा हिदायत का युग है। अब हम सातवें हज़ार के सर पर हैं। इसके बाद किसी दूसरे मसीह को क़दम रखने का स्थान नहीं। क्योंकि युग सात ही हैं जो नेकी और बदी में विभाजित किए गए हैं। इस विभाजन को समस्त नबियों ने वर्णन किया है। किसी ने संक्षेप के तौर पर और किसी ने विस्तार के तौर पर और यह विवरण पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है जिस से मसीह मौऊद के बारे में पवित्र क़ुर्आन में से स्पष्ट तौर पर भविष्यवाणी निकलती है और यह विचित्र बात है कि समस्त नबी अपनी किताबों में मसीह के युग कि किसी न किसी रंग में सूचना देते हैं और दज्जाल के फ़ित्ने को भी वर्णन करते हैं। और दुनिया में कोई भविष्यवाणी इस शक्ति और निरन्तरता की नहीं होगी जैसा कि समस्त नबियों ने अन्तिम मसीह के बार में की है तद्यपि इस युग में ऐसे लोग भी पाए जाते हैं जो इस भविष्यवाणी के सही होने से भी इन्कारी हैं। कुछ कहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन से इस भविष्यवाणी को सिद्ध करो, परन्तु अफ़सोस कि यदि वे पवित्र क़ुर्आन पर विचार करते या उस में सोचते तो उन्हें इक़रार करना पड़ता कि यह भविष्यवाणी पवित्र क़ुर्आन में नितान्त स्पष्टता से मौजूद है और इतनी स्पष्टता से मौजूद है कि दक्ष मनुष्य के लिए इस से बढ़कर विवरण की आवश्यकता नहीं। सूरह तहरीम में संकेत किया गया है कि इस उम्मत के कुछ लोग इब्ने मरयम कहलाएंगे। क्योंकि पहले मरयम से उनको उपमा देकर फिर मरयम की तरह उनमें रूह का फूँका जाना वर्णन किया गया है। यह इस बात की ओर संकेत है कि सर्वप्रथम वह मरयमी अस्तित्त्व लेकर

और उस से उन्नति करके फिर इब्ने मरयम बन जाएंगे। जैसा कि बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला ने अपनी वह्यी में सर्वप्रथम मेरा नाम मरयम रखा और फ़रमाया-

يامريم اسكن انت وزوجك الجنة

अर्थात् हे मरयम तू और तेरे दोस्त स्वर्ग में दाख़िल हो जाओ। फिर फ़रमाया-

نفخت فيك من روح الصدق

अर्थात् हे मरयम मैंने सच्चाई की रूह तुझ में फूंक दी (जैसे रूपक के रंग में मरयम सच्चाई से हामिलः हो गई) और फिर अन्त में फ़रमाया-

ياعيسٰى انى متوفّيك ورافعك اِلىّ

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा। तो यहां मरयमी पद से बदल कर मेरा नाम ईसा रखा गया और इस प्रकार से मुझे इब्ने मरयम ठहराया गया ताकि वह वादा जो सूरह मरयम में किया गया था पूरा हो। ऐसा ही सूरह अन्नूर में वर्णन किया गया है कि समस्त ख़लीफ़े इसी उम्मत में से पैदा होंगे और पवित्र क़ुर्आन से निकलता है कि इस उम्मत पर दो युग बहुत भयावह आएंगे। एक वह युग जो अबू बक्र के ख़िलाफ़त काल में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद आया और दूसरा वह युग जो दज्जाल के फ़ित्ने का युग है जो मसीह के काल में आने वाला था, जिससे शरण मांगने के लिए इस आयत में संकेत है-

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ (सूरह अलफ़ातिहा-7)

और इसी युग के लिए यह भविष्यवाणी सूरह नूर में मौजूद है-

(अन्नूर-56) وَلَيُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا

इस आयत के मायने पहली आयत के साथ मिलाकर ये हैं कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि इस धर्म पर अन्तिम युग में एक भूकम्प आएगा और भय पैदा हो जाएगा कि यह धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी पर से गुम हो जाए। तब ख़ुदा तआला दोबारा इस धर्म को समस्त पृथ्वी पर स्थापित कर देगा और भय के पश्चात् अमन प्रदान कर देगा। जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाता है-

هُوَ الَّذِيۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰي وَدِيۡنِ الۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ۙ

(अस्सफ-10)

अर्थात् ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने अपने रसूल को इसलिए भेजा ताकि इस्लाम धर्म को सब धर्मों पर विजयी कर दे। यह भी मसीह मौऊद के युग की ओर संकेत है और फिर यह आयत

(अल हिज्र-10) اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ ۝

यह भी मसीह मौऊद के युग की ओर संकेत है। पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि से मसीह मौऊद के युग को हज़रत अबू बक्र के युग से समानता है। बुद्धिमानों के लिए जो विचार करते हैं यह क़ुर्आन का सबूत सन्तोषजनक है और यदि किसी मूर्ख कि दृष्टि में यह पर्याप्त नहीं हैं तो फिर उसे इक़रार करना चाहिए कि तौरात में न हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में कोई भविष्यवाणी है न हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कोई भविष्यवाणी है क्योंकि वे शब्द भी केवल संक्षिप्त और इसी कारण यहूदियों को ठोकर लगी और स्वीकार न किया। उदाहरणतया यदि स्पष्ट शब्दों में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह भविष्यवाणी की जाती कि

मक्का में पैदा होंगे और आप का मुबारक नाम मुहम्मद होगा और आप के पिता का नाम अब्दुल्लाह और दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब होगा और आप बनी इस्माईल के ख़ानदान में से होंगे और मदीना में हिजरत करेंगे और मूसा से इतने समय पश्चात् पैदा होंगे। तो इन निशानों के साथ कोई यहूदी इन्कार नहीं कर सकता था और हज़रत मसीह की भविष्यवाणी के बारे में यहूदियों पर और भी कठिनाइयां पड़ीं जिनसे वे स्वयं को असमर्थ समझते हैं। क्योंकि हज़रत मसीह के बारे में यह भविष्यवाणी है कि वह मसीह प्रकट नहीं होगा जब तक इल्यास दोबारा दुनिया में न आए। परन्तु इल्यास तो अब तक न आया। और ख़ुदा की किताब में यह शर्त थी कि वह सच्चा मसीह जो ख़ुदा की ओर से आएगा अवश्य है कि उससे पहले इल्यास दोबारा दुनिया में आ जाए। हज़रत मसीह की ओर से यह उत्तर था कि इस वाक्य से अभिप्राय इल्यास का मसील (समरूप) है न कि असल इल्यास। परन्तु यहूदी कहते हैं कि यह ख़ुदा के कलाम का अक्षरांतरण है, हमें तो असल इल्यास के दोबारा आने की ख़बर दी गई है। इससे मालूम होता है कि नबियों के बारे में जो भविष्यवाणियां होती हैं वे हमेशा बारीक होती हैं ताकि अभागे और भाग्यशाली में अन्तर प्रकट हो जाए।

फिर इसके अतिरिक्त यह बात स्पष्ट है कि जो दावा ईमानदारी पर आधारित होता है वह अपने साथ एक ही प्रकार का सबूत नहीं रखता अपितु उस सच्चे हीरे के समान जिस के प्रत्येक पहलू में चमक प्रकट होती है वह दावा भी प्रत्येक पहलू से चमकता है। इसलिए मैं ज़ोर से कहता हूं कि मेरा मसीह मौऊद होने का दावा इसी शान का है जो प्रत्येक पहलू से चमक रहा है। सर्वप्रथम इस पहलू को देखो

कि मेरा दावा ख़ुदा की ओर से होने का और ख़ुदा से वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मानित होने का लगभग सत्ताईस वर्ष से है अर्थात् उस युग से भी बहुत पहले जब बराहीन अहमदिया नहीं लिखी गई थी। और फिर बराहीन अहमदिया के समय में वह दावा अभी पुस्तक में लिख कर प्रकाशित किया गया जिस को चौबीस वर्ष के लगभग गुज़र चुके हैं। अब बुद्धिमान आदमी समझ सकता है कि झूठ का सिलसिला इतना लम्बा नहीं हो सकता और चाहे कोई व्यक्ति कैसा ही झूठा हो वह ऐसी नीचता का इतना लम्बी अवधि तक जिसमें एक बच्चा पैदा होकर सन्तान वाला हो सकता है स्वाभाविक तौर पर करने वाला नहीं हो सकता सिवाए इसके कि इस बात को कोई बुद्धिमान स्वीकार नहीं करेगा कि एक व्यक्ति लगभग सत्ताईस वर्ष से ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा करता है और हर सुबह अपनी ओर से इल्हाम बना कर ख़ुदा तआला की ओर सम्बद्ध करता है और प्रतिदिन यह दावा करता है कि ख़ुदा तआला ने मुझे यह इल्हाम किया है तथा ख़ुदा तआला का यह कलाम है जो मुझ पर उतरा है। हालांकि ख़ुदा जानता है कि वह इस बात में झूठा है, न उसको कभी इल्हाम हुआ और न ख़ुदा तआला ने उससे वार्तालाप किया, तथा ख़ुदा उसको एक लानती इन्सान समझता है परन्तु फिर भी उसकी सहायता करता है और उसकी जमाअत को उन्नति प्रदान करता है और उन समस्त योजनाओं तथा विपत्तियों से बचाता है जो दुश्मन उसके लिए बनाते हैं। फिर एक और तर्क है जिस से मेरी सच्चाई प्रकाशमान दिन के समान प्रकट होती है और मेरा ख़ुदा की ओर से होना पुख़्ता सबूत को पहुंचाता है और वह यह कि उस युग में जब कि मुझे कोई भी नहीं जानता था अर्थात् बराहीन

अहमदिया के युग में जबकि मैं एक एकान्तवास में इस पुस्तक को लिख रहा था और उस ख़ुदा के अतिरिक्त जो अन्तर्यामी है कोई मेरी हालत से परिचित न था तब उस युग में ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके कुछ भविष्यवाणियां कीं जो उसी अकेलेपन और ग़रीबी के समय में बराहीन अहमदिया में छप कर सम्पूर्ण देश में प्रसारित हो गईं। और वे ये हैं-

يا احمدی انت مرادی ومعی سرّك سرّی انت منّی بمنزلة توحیدی وتفریدی فحانَ اَنْ تُعانَ وَتعرف بین النّاس انت منّی بمنزلة لا یعلمها الخلق ینصرك اللّٰه فی مواطن انت وجیه فی حضرتی اخترتك لنفسی وانّی جاعلك للناس امامًا ینصرك رجال نوحی الیهم من السماء یأتیك من كلّ فجٍ عمیق یأتون من كلّ فجٍ عمیق ولا تصعّر لخلق اللّٰه ولا تسئم من الناس وقل ربّ لا تذرنی فردًا وانت خیر الوارثین اصحاب الصفّة وما ادراك ما اصحاب الصُفّة ترٰی أعینهم تفیض من الدمع ربّنا انّنا سمعنا منادیًا ینادی للایمان انّی جاعلك فی الارض خلیفة یقولون انّٰی لك هٰذا قل اللّٰه عجیب لا یُسئَل عما یفعل وهم یُسئَلون ویقولون اِن هٰذا الّا اختلاق قل اللّٰه ثم ذرهم فی خوضهم یلعبون هو الذی ارسل رسوله بالهدٰی ودین الحق لیظهره علی الدین كلّه یریدون ان یطفئوا نور اللّٰه واللّٰه مُتِمّ نورہٖ ولوكره الكافرون یعصمك اللّٰه ولو لم یعصمك الناس

اِنّك باعيننا سمّيتك المتو كّل وما كان اللّٰہ ليترك كك حتّٰى يميز الخبيث من الطيّب شاتان تذبحان و كل من عليها فان وعسٰى ان تكرھوا شيئًا وھو خير لكم وعسٰى ان تحبّوا شيئًا وھو شرّ لكم واللّٰہ يعلم وانتم لا تعلمون

अनुवाद- ख़ुदा मुझे संबोधित करके फ़रमाता है- "हे मेरे अहमद! तू मेरी मनोकामना है और मेरे साथ है तेरा रहस्य मेरा रहस्य है, तू मुझ से ऐसा है जैसा मेरी तौहीद और तफ़रीद (एकेश्वरवाद) अत: वह समय क़रीब है कि तेरी सहायता के लिए लोग तैयार किए जाएंगे और तुझे लोगों में प्रसिद्ध किया जाएगा, तू मुझ से वे मुक़ाम और पद रखता है जिसे दुनिया नहीं जानती, ख़ुदा प्रत्येक मैदान में तुझे मदद देगा, तू मेरे पास सम्मान रखता है, मैंने तुझे अपने लिए चुना, मैं बहुत से लोग तेरे अधीन और अनुयायी करूंगा और तू उनका इमाम किया जाएगा, मैं लोगों के हृदयों में इल्हाम करूंगा ताकि अपने माल से तेरी सहायता करें दूर और लम्बे तथा गहरे मार्गों से तुझे आर्थिक सहायता पहुंचेगी, लोग तेरी सेवा में दूर-दूर के मार्गों से आएंगे। अत: तुझ पर अनिवार्य है कि उन से बुरा व्यवहार न करे और उनकी प्रचुरता, भीड़ और समूह के समूह आने से थक न जाए और यह दुआ किया कर कि हे मेरे ख़ुदा! मुझे अकेला मत छोड़ और तुझ से उत्तम कोई वारिस नहीं। ख़ुदा अस्हाबुस्सुफ्फ: तेरे लिए उपलब्ध करेगा और तू क्या जानता है कि अस्हाबुस्सुफ्फ: क्या चीज़ है। तू देखेगा कि उनके आंसू जारी होंगे और वे कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा! हम ने एक आवाज़ देने वाले की आवाज़ सुनी जो लोगों को ईमान की ओर

बुलाता है। मैं तुझे पृथ्वी में ख़लीफ़ा बनाऊँगा। लोग तिरस्कारपूर्वक कहते हैं कि तुझे यह पद कैसे प्राप्त हो सकता है? उनको कह दे कि वह ख़ुदा अद्भुत कुदरतों वाला ख़ुदा है। जो काम वह करता है कोई पूछ नहीं सकता कि तू ने ऐसा क्यों कहा और वह प्रत्येक के कथन का हिसाब लेगा कि तुम ने ऐसा क्यों किया और कहते हैं कि यह तो केवल बनावट है। इन को उत्तर दे कि ख़ुदा इस कारोबार का प्रवर्तक है, फिर उनको उनके खेल-कूद में छोड़ दे। ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने अपना रसूल हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करके दिखाए। ये लोग इरादा करेंगे कि ख़ुदा जिस प्रकाश को दुनिया में फैलाना चाहता है उसको बुझा दें परन्तु ख़ुदा उस प्रकाश को पूरा करेगा अर्थात् समस्त तैयार हृदयों तक पहुंचाएगा। यद्यपि काफ़िर लोग पसन्द भी न करें। ख़ुदा तुम्हें उनकी बुराई से बचाएगा यद्यपि लोग बचा न सकें। तू मेरी आँखों के सामने है। मैंने तेरा नाम मुतवक्किल रखा है। और ख़ुदा ऐसा नहीं है कि तुझे छोड़ दे जब तक कि वह पवित्र और अपवित्र में अन्तर करके न दिखाए। दो बक़रियां ज़िबह की जाएंगी और प्रत्येक जो पृथ्वी पर है अन्त में उसने मरना है। क़रीब है कि एक चीज़ को तुम बुरा समझो और वह चीज़ वास्तव में तुम्हारे लिए अच्छी हो और संभव है कि एक चीज़ को तुम अच्छा समझो और वह चीज़ तुम्हारे लिए बुरी हो तथा ख़ुदा तआला जानता है कि कौन सी चीज़ तुम्हारे लिए अच्छी है और तुम नहीं जानते।

अब जानना चाहिए कि इन इल्हामों में चार महान भविष्यवाणियों का वर्णन है-

(1) एक यह कि ख़ुदा तआला ऐसे समय में जबकि मैं अकेला था और कोई मेरे साथ न था उस युग में जिसको अब लगभग तेईस वर्ष गुज़र चुके हैं मुझे ख़ुशख़बरी देता है कि तू अकेला नहीं रहेगा और वह समय आता है बल्कि क़रीब है कि तेरे साथ लोगों के समूह के समूह हो जाएं और वे दूर-दूर के मार्गों से तेरे पास आएंगे और इतनी प्रचुरता से आएंगे कि क़रीब है कि तू उन से थक जाए या बुरा व्यवहार करे। परन्तु तू ऐसा न कर।

(2) दूसरी भविष्यवाणी यह है कि उन लोगों से बहुत सी आर्थिक सहायता मिलेगी। इन भविष्यवाणियों के बारे में एक दुनिया गवाह है कि जब ये भविष्यवाणियां बराहीन अहमदिया में लिखी गईं तब में एक अकेला आदमी अज्ञात अवस्था में क़ादियान में जो एक वीरान गांव है पड़ा था। परन्तु इसके पश्चात् अभी दस वर्ष नहीं गुज़र पाए थे कि ख़ुदा तआला के इल्हाम के अनुसार लोगों का रुजू हो गया और अपने धन के द्वारा सहायता भी करने लगे। यहां तक कि अब दो लाख से अधिक ऐसे इन्सान हैं जो मेरी बैअत में दाख़िल हैं और

(3) इन्हीं इल्हामों में से एक तीसरी भविष्यवाणी यह है कि लोग कोशिश करेंगे कि इस सिलसिले को मिटा दें और उस प्रकाश को बुझा दें परन्तु वे इस कोशिश में असफल रहेंगे। अब यदि कोई व्यक्ति बेईमानी करे तो उसे कौन रोक सकता है अन्यथा ये तीनों भविष्यवाणियां सूर्य के समान चमक रही हैं। स्पष्ट है कि ऐसे समय में जब कि एक व्यक्ति गुमनामी की हालत में पड़ा है और अकेला और असहाय है और कोई ऐसी निशानी मौजूद नहीं है कि वह लाखों इन्सानों का सरदार बनाया जाए और न कोई यह निशानी मौजूद है

कि लोग हज़ारों रुपए उसकी सेवा में प्रस्तुत करें, फिर ऐसी हालत में ऐसे व्यक्ति के बारे में इतने सौभाग्य और ख़ुदा की सहायता की भविष्यवाणी यदि केवल बुद्धि और अटकल द्वारा हो सकती है तो इन्कारी को चाहिए कि नाम लेकर उसका उदाहरण प्रस्तुत करे। विशेष तौर पर जबकि इन दोनों भविष्यवाणियों को इस तीसरी भविष्यवाणी के साथ ही रखा जाए। जिसका मतलब यह है कि लोग बहुत प्रयास करेंगे कि ये भविष्यवाणियां पूरी न हों परन्तु ख़ुदा पूरी करेगा। अतः आवश्यक तौर पर इन तीनों भविष्यवाणियों को इकट्ठी दृष्टि के साथ देखने से मानना पड़ेगा कि यह इन्सान का काम नहीं है। इन्सान तो यह दावा भी नहीं कर सकता कि इतने समय तक जीवित भी रह सके।

(4) फिर चौथी भविष्यवाणी इन इल्हामों में यह है कि उन दिनों में इस सिलसिले के दो मुरीद शहीद किए जाएंगे। अतः शेख़ अब्दुर्रहमान अमीर अब्दुर्रहमान काबुल के शासक के आदेश से और मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ खान साहिब अमीर हबीबुल्लाह के द्वारा काबुल में शहीद किए गए।

इसके अतिरिक्त और सैकड़ों भविष्यवाणियां है जो अपने समयों पर पूरी हो गईं। फिर एक बार मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब को समय से पूर्व सूचना दी गई कि उनके घर में एक बेटा पैदा होगा और उसके शरीर पर कई फोड़े होंगे। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया और वह बेटा पैदा हुआ और उसके शरीर पर फोड़े थे। मौलवी साहिब इस जलसे में मौजूद होंगे उन से प्रत्येक व्यक्ति कसम लेकर पूछ सकता है कि यह बात सच है कि नहीं? फिर सरदार मुहम्मद अली खान साहिब रईस मालेरकोटला का लड़का अब्दुर्रहीम नामक बीमार

हुआ और निराशा के लक्षण प्रकट हो गए और मुझे ख़ुदा तआला ने इल्हाम द्वारा ख़बर दी कि तेरी सिफ़ारिश से यह लड़का अच्छा हो सकता है। अत: मैंने एक मेहरबान नसीहत करने वाले के रंग में उसके लिए बहुत दुआ की और वह लड़का अच्छा हो गया जैसे कि मुर्दा जीवित हो गया। फिर ऐसा ही उनका दूसरा लड़का अब्दुल्लाह खान बीमार हुआ। वह भी भयानक बीमारी में ग्रस्त होकर मौत तक पहुँच गया उसके स्वास्थ होने के बारे में मुझे ख़बर दी गई और वह भी मेरी दुआ से अच्छा हो गया।

इसी प्रकार और बहुत से निशान हैं, यदि वे सब लिखें जाएँ तो संभव नहीं कि वह निबंध दस दिन में भी समाप्त हो सके। इन निशानों के गवाह एक दो नहीं अपितु कई लाख इन्सान गवाह हैं। अर्थात् मैंने उन निशानों में से डेढ़ सौ निशान अपनी पुस्तक "नुज़ूलुल मसीह" में दर्ज किए हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। वे समस्त निशान कई प्रकार के हैं। कुछ आकाश में प्रकट हुए, कुछ पृथ्वी में। कुछ दोस्तों के संबंध में हैं, कुछ दुश्मनों के बारे में जो पूरे हो चुके। कुछ मेरे अस्तित्व के बारे में हैं, कुछ मेरी सन्तान के संबंध में और कुछ ऐसे निशान भी हैं कि जो केवल किसी दुश्मन के द्वारा मेरे स्वयं के हस्तक्षेप के बिना प्रकट हो गए हैं। जैसा कि मौलवी गुलाम दस्तगीर साहिब क़सूरी ने अपनी पुस्तक "फ़तह रहमान" में अपने तौर पर मेरे साथ मुबाहल: किया और यह दुआ की कि दोनों में से जो झूठा है ख़ुदा उसे मार दे। तो इस दुआ के बाद केवल कुछ दिन गुज़रने पाए थे कि कथित मौलवी साहिब स्वयं मृत्यु पा गए और अपनी मृत्यु से मेरे सच्चा होने की गवाही दे गए। और ऐसे हज़ारों लोग हैं

कि केवल स्वप्नों के द्वारा उन पर ख़ुदा ताआला ने मेरा सच्चा होना प्रकट कर दिया। अत: ये निशान इतने खुले-खुले हैं कि यदि उनको इकट्ठी दृष्टि से देखा जाए तो मनुष्य को मानने के अतिरिक्त कुछ बन नहीं पड़ता। इस युग के कुछ विरोधी यह भी कहते हैं कि यदि पवित्र क़ुर्आन से यह सबूत मिले तो हम मान लेंगे। मैं उनके उत्तर में कहता हूँ कि पवित्र क़ुर्आन में मेरे मसीह होने के बारे में पर्याप्त सबूत हैं जैसा कि मैं कुछ उल्लेख भी कर चुका हूँ।

इसके अतिरिक्त इस शर्त को प्रस्तुत करना भी सर्वथा ज़बरदस्ती और राज्य है। किसी व्यक्ति के सच्चा मानने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसकी खुली-खुली ख़बर किसी आकाशीय किताब में मौजूद भी है। यदि यह शर्त आवश्यक है तो किसी नबी की नुबुव्वत सिद्ध नहीं होगी। असल वास्तविकता यह है कि किसी व्यक्ति के नुबुव्वत के दावे पर सर्वप्रथम समय कि आवश्यकता देखी जाती है। फिर यह भी देखा जाता है कि वह नबियों के निर्धारित किये हुए समय पर आया है या नहीं फिर यह भी सोचा जाता है कि ख़ुदा ने उसकी सहायता की है या नहीं फिर यह भी देखना होता है कि दुश्मनों ने जो आरोप किये हैं उनका पूरा-पूरा उत्तर दिया गया या नहीं। जब ये सब बातें पूरी हो जाएं तो मान लिया जायेगा कि वह मनुष्य सच्चा है अन्यथा नहीं। अब बिल्कुल स्पष्ट है कि युग अपनी वर्तमान रुपी जीभ से आर्तनाद कर रहा है कि इस समय इस्लामी फूट को दूर करने के लिये तथा इस्लाम को वाह्य आक्रमणों से बचाने के लिए और दुनिया में लुप्त हो चुकी रूहानियत को दोबारा स्थापित करने के लिये नि:संदेह एक आकाशीय सुधारक की आवश्यकता है। जो दोबारा विश्वास प्रदान

करके ईमान की जड़ों को पानी दे और इस प्रकार बुराई और गुनाह से छुड़ा कर नेकी और ईमानदारी की ओर वापस लाए। इसलिए बिल्कुल आवश्यकता के समय में मेरा आना ऐसा प्रकट है कि मैं सोच नहीं सकता कि कट्टर पक्षपाती के अतिरिक्त इससे कोई इन्कार कर सके। और दूसरी शर्त अर्थात् यह देखना कि नबियों के निर्धारित किये हुए समय पर आया है या नहीं। यह शर्त भी मेरे आने पर पूरी हो गयी है। क्योंकि नबियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि जब छठा हज़ार समाप्त होने को होगा तब वह मसीह मौऊद प्रकट होगा जो चंद्रमा के हिसाब के अनुसार छठा हज़ार जो हज़रत आदम के प्रकटन के समय से लिया जाता है। बहुत समय हुआ जो समाप्त हो चुका है और सूर्य के हिसाब के अनुसार छठा हज़ार समाप्त होने को है। इसके अतिरिक्त हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया था कि प्रत्येक सदी के सर पर एक मुजद्दिद आयेगा जो धर्म को ताज़ा करेगा। और अब इस चौदहवीं सदी में से इक्कीस वर्ष गुज़र ही चुके हैं और बाईसवां गुज़र रहा है। अब क्या यह इस बात का निशान नहीं कि वह मुजद्दिद आ गया। और तीसरी शर्त यह थी कि क्या ख़ुदा ने उसका समर्थन भी किया है या नहीं, तो इस शर्त का मुझ में पाया जाना भी प्रकट है। क्योंकि इस देश की प्रत्येक क़ौम के कुछ दुश्मनों ने मुझे मिटाना चाहा और नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया और बहुत कोशिशें कीं परन्तु वे अपनी समस्त कोशिशों में असफल रहे। किसी क़ौम को यह गर्व प्राप्त न हुआ कि वह कह सके कि हम में से किसी व्यक्ति के तबाह करने के लिए किसी प्रकार की कोशिशें नहीं कीं और उनकी कोशिशों के विरुद्ध ख़ुदा ने मुझे सम्मान दिया और

हज़ारों लोगों को मेरे अधीन कर दिया। तो यदि यह ख़ुदा का समर्थन नहीं था तो और क्या था। किसी को मालूम नहीं कि सब क़ौमों ने अपने-अपने तौर पर ज़ोर लगाये ताकि मुझे मिटा दें परन्तु मैं उनकी कोशिशों से मिट न सका अपितु मैं दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया, यहाँ तक कि मेरी जमाअत दो लाख से अधिक हो गयी। अतः यदि ख़ुदा का गुप्त हाथ मेरे साथ न होता और यदि मेरा कारोबार केवल इन्सानी होता तो इन विभिन्न तीरों में से मैं किसी तीर का निशाना अवश्य बन जाता और कभी का तबाह हुआ होता और आज मेरी कब्र का भी निशान न होता। क्योंकि जो ख़ुदा पर झूठ बांधता है उसके मारने के लिए कई मार्ग निकल आते हैं। कारण यह है कि ख़ुदा स्वयं उसका दुश्मन होता है। परन्तु ख़ुदा ने उन लोगों की समस्त योजनाओं से मुझे बचा लिया है जैसा कि उसने चौबीस वर्ष पहले ख़बर दी थी। इसके अतिरिक्त यह कैसा खुला-खुला समर्थन है कि ख़ुदा ने मेरा अकेलापन और अप्रसिद्धि के युग में मुझे बराहीन अहमदिया में खुले शब्दों में सूचना दे दी कि मैं तुझे सहायता दूँगा और एक बहुत बड़ी जमाअत तेरे साथ कर दूंगा और रोक डालने वालों को असफ़ल रखूँगा। अतः एक साफ दिल लेकर सोचो की यह कितना स्पष्ट समर्थन है और कैसा खुल-खुला निशान है। क्या आकाश के नीचे ऐसी क़ुदरत किसी मनुष्य को है या किसी शैतान को कि एक अप्रसिद्धि के समय में ऐसी सूचना दे और वह पूरी हो जाए और हज़ारों शत्रु उठे किन्तु कोई इस सूचना को रोक न सके। फिर चौथी शर्त यह थी कि विरोधियों ने जो ऐतराज़ किये उन ऐतराज़ों का पूरा-पूरा उत्तर दिया गया या नहीं। यह शर्त भी सफाई से तय हो चुकी, क्योंकि विरोधियों को एक बड़ा ऐतराज़ यह था कि मसीह

मौऊद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं। वही दुबारा दुनिया में आयेंगे तो उनको उत्तर दिया गया कि पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि हज़रत ईसा मृत्यु पा चुके हैं और फिर दोबारा दुनिया में कदापि नहीं आएंगे। जैसा कि अल्लाह तआला उन्हीं की जीभ से फ़रमाता है

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ (अल माइदह-118)

पहली आयतों को साथ मिलाकर अनुवाद यह है- कि ख़ुदा तआला क़यामत को हज़रत ईसा से पूछेगा कि क्या तू ने ही यह शिक्षा दी थी कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा करके मानना और हमारी उपासना करना और वह उत्तर देंगे कि हे मेरे ख़ुदा! यदि मैंने ऐसा कहा है तो तुझे मालूम होगा क्योंकि तू अन्तर्यामी है मैंने तो उनको वही बातें कहीं जो तू ने मुझे बताईं। अर्थात् यह कि ख़ुदा को एक और भागीदार रहित तथा मुझे उसका रसूल मानो। मैं उस समय तक उनकी हालतों को ज्ञान रखता था जब तक कि मैं उनमें था फिर जब तू ने मुझे मृत्यु दे दी तो तू उन पर गवाह था। मुझे क्या ख़बर है कि मेरे बाद उन्होंने क्या किया। अब इन आयतों से प्रकट है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यह उत्तर देंगे कि अब जब तक मैं जीवित था ईसाई लोग बिगड़े नहीं थे और जब मैं मर गया तो मुझे ख़बर नहीं कि उन का क्या हाल हुआ। तो यदि मान लिया जाए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अब तक जीवित हैं तो साथ ही मानना पड़ेगा कि ईसाई भी अब तक बिगड़े नहीं और सच्चे धर्म पर स्थापित हैं। फिर इसके अतिरिक्त इस आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपनी मृत्यु के पश्चात् अपनी अज्ञानता व्यक्त करते हैं और कहते हैं- हे मेरे ख़ुदा! जब तूने मुझे मृत्यु दे दी उस समय से मुझे अपनी

उम्मत का कुछ हाल मालूम नहीं तो यदि यह बात सही मान ली जाए कि वह क़यामत से पहले दुनिया में आएंगे और महदी के साथ मिलकर काफ़िरों से लड़ाइयाँ करेंगे तो नाऊज़ुबिल्लाह पवित्र क़ुर्आन की यह आयत ग़लत ठहरती है और या यह मानना पड़ता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन ख़ुदा तआला के सामने झूठ बोलेंगे और इस बात को छुपाएंगे कि वह दोबारा दुनिया में आए थे और चालीस वर्ष रहे थे और महदी के साथ मिलकर ईसाइयों से लडाइयां की थीं। अत: कोई पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाने वाला हो तो केवल इस एक ही आयत से वह सम्पूर्ण योजना झूठी होती है जिस में यह प्रकट किया गया है कि ख़ूनी महदी पैदा होगा और ईसा उसकी सहायता के लिए आकाश से आएगा, निस्सन्देह वह व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन को छोड़ता है जो ऐसी आस्था रखता है। फिर जब हमारे विरोधी प्रत्येक बात में पराजित हो जाते हैं तो अन्त में यह कहते हैं कि कुछ भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं। जैसे आथम की भविष्यवाणी। मैं कहता हूं कि अब आथम कहां है। इस भविष्यवाणी का सारांश यह था कि जो व्यक्ति झूठा है वह सच्चे के जीवन में ही मृत्यु पा जाएगा तो आथम मृत्यु पा गया और मैं अब तक जीवित हूं। वह भविष्यवाणी शर्त वाली थी। अर्थात् उसकी मीआद शर्त से सम्बद्ध थी। अत: जिस हालत में आथम भविष्यवाणी को सुनकर डरता रहा तो उसने इस शर्त को पूरा कर दिया इसलिए उसे कुछ महीने की और छूट दी गई। अफ़सोस कि ऐसे ऐतराज़ करने वाले इस बात पर विचार नहीं करते कि जो यूनुस नबी ने भविष्यवाणी की थी उसके साथ तो कोई शर्त न थी। जैसा कि यूना नबी की किताब

में लिखा है। तथापि वह भविष्यवाणी पूरी न हुई। मूल बात यह है कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणियां अर्थात् वे भविष्यवाणियां जिन में किसी पर अज़ाब उतरने का वादा हो वह ख़ुदा के नज़दीक हमेशा तौब: की शर्त से या दान-पुण्य की शर्त से प्रतिबंधित होती हैं या भय की शर्त से प्रतिबंधित होती हैं। और तौब:, क्षमायाचना, दान-पुण्य और ख़ुदा तआला से डरने के साथ उन भविष्यवाणियों में विलम्ब हो सकता है या बिल्कुल टल सकती हैं अन्यथा यूनुस नबी नबी नहीं ठहरता, क्योंकि उसकी भविष्यवाणी बिल्कुल ग़लत निकली ख़ुदा के अज़ाब के इरादे जो किसी अपराधी के बारे में होते हैं दान-पुण्य और दुआ से भी टल सकते हैं। तो जो भविष्यवाणी अज़ाब पर आधारित हो उस का सारांश केवल इतना है कि ख़ुदा तआला ने किसी व्यक्ति के बारे में अज़ाब देने का इरादा किया है जिस इरादे को किसी नबी पर अभिव्यक्त भी कर दिया है तो क्या कारण कि वह इरादा उस हालत में तो दान-पुण्य और दुआ से टल सकता है कि जब किसी नबी पर प्रकट न किया गया परन्तु जब प्रकट किया गया हो तो फिर टल नहीं सकता। यह विचार सर्वथा मूर्खता है और इसमें समस्त नबियों का विरोध है। इसके अतिरिक्त कुछ भविष्यवाणियां संक्षिप्त भी होती हैं और कुछ संदिग्ध होती हैं कि उनकी वास्तविकता बाद में खुलती है और यह भी सच है कि कभी किसी भविष्यवाणी के मायने करने में एक नबी का विवेचन भी ग़लत हो सकता है जिस से कुछ हानि नहीं। नबी के साथ भी उसका मनुष्य होना है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- "मेरे बारह हवारी स्वर्ग में बारह तख़्तों पर बैठेंगे" किन्तु यह बात सही

न हुई अपितु एक हवारी मुर्तद होकर नर्क के योग्य हो गया और आपने फ़रमाया था कि अभी उस युग के लोग जीवित होंगे कि मैं दोबारा आ जाऊंगा। यह बात भी सही न निकली तथा अन्य कई भविष्यवाणियां हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विवेचन की ग़लती के कारण पूरी नहीं हो सकीं। तो ये विवेचना की गलतियां थीं। और मेरी भविष्यवाणियों का यह हाल है कि यदि कोई सब्र और कृतज्ञता से सुनने वाला हो तो एक लाख से भी अधिक भविष्यवाणियाँ और निशान मेरे समर्थन में प्रकट किए गए हैं। फिर यह बड़ी नीचता है कि हज़ारों भविष्यवाणियां जो पूरी हो चुकी हैं कुछ लाभ प्राप्त न किया जाए और यदि एक समझ में न आ सके तो उसे ऐतराज़ का निशाना बना दिया जाए और शोर डाल दिया जाए तथा उसी पर सब फैसला कर दिया जाए। मैं आशा रखता हूं कि यदि कोई व्यक्ति चालीस दिन भी मेरे पास रहे तो कोई निशान देख लेगा। अब मैं समाप्त करता हूं और विश्वास रखता हूं कि (एक) सत्य के अभिलाषी के लिए इतना पर्याप्त है।

والسلام علیٰ من اتّبع الھدٰی

लेखक- मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी

हाशिया

मुझ से एक साहिब हकीम मिर्ज़ा महमूद नामक ईरानी ने आज 2, सितम्बर 1902 ई० को एक पत्र द्वारा पूछा है कि इस आयत के क्या मायने हैं-

(अलकहफ़-87) وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ

तो स्पष्ट हो कि क़ुर्आनी आयत अपने अन्दर बहुत से रहस्य रखती है जिसको परिधि में नहीं लिया जा सकता और जिसके बाह्य के नीचे एक आन्तरिक भी है परन्तु वे मायने जो ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किए हैं वे ये हैं कि यह आयत अपने पहले और संलग्न (प्रसंग) के साथ मसीह मौऊद के लिए एक भविष्यवाणी है और उसके प्रकट होने के समय को निश्चित करती है और इसका विवरण यह है कि मसीह मौऊद भी ज़ुलकरनैन है। क्योंकि कर्न अरबी भाषा में सदी को कहते हैं और क़ुर्आन की आयत में इस बात की ओर संकेत है कि वह वादे का मसीह जो किसी समय प्रकट होगा उसकी पैदायश और उसका प्रकट होना दो सदियों पर आधारित होगा। अत: मेरा अस्तित्व इसी प्रकार पर है। मेरे अस्तित्व ने प्रसिद्ध और ख्यात सदियों में चाहे हिज्री हैं चाहे मसीही, चाहे विक्रमी इस तौर पर अपना प्रकटन किया है कि हर जगह दो सदियों पर मेरी पैदायश और प्रकटन समाप्त नहीं हुए। अत: जहां तक मुझे मालूम है मेरी पैदायश और मेरा प्रकटन प्रत्येक धर्म की सदी में केवल एक सदी पर बस नहीं करता अपितु दो सदियों में अपना क़दम रखता है। तो इन मायनों से मैं ज़ुलकरनैन हूं। फिर कुछ हदीसों में भी मसीह मौऊद का नाम ज़ुलकरनैन आया है। उन हदीसों में भी ज़ुलकरनैन

के यही मायने हैं जो मैंने वर्णन किए हैं। अब शेष आयत के मायने भविष्यवाणी की दृष्टि से ये हैं कि दुनिया में दो क़ौमें बड़ी हैं जिन को मसीह मौऊद की ख़ुशख़बरी दी गई है। और मसीही दावत के लिए पहले उन्हीं का अधिकार ठहराया गया है। इसलिए ख़ुदा तआला एक रूपक के रंग में यहां फ़रमाता है कि मसीह मौऊद जो ज़ुलकरनैन है अपनी सैर में दो क़ौमों को पाएगा। एक क़ौम को देखेगा कि वह अन्धकार में एक ऐसे बदबूदार झरने पर बैठी है कि जिस का पानी पीने योग्य नहीं और उसमें बहुत बदबूदार कीचड़ है और इतना है कि अब उसे पानी नहीं कह सकते। यह ईसाई क़ौम है जो अंधकार में है जिन्होंने मसीही झरने को अपनी ग़लतियों से बदबूदार कीचड़ में मिला दिया है। दूसरी सैर में मसीह मौऊद ने जो ज़ुलक़रनैन है उन लोगों को देखा जो सूर्य की जलती हुई धूप में बैठे हैं और सूर्य की धूप तथा उनमें कोई पर्दा नहीं और सूर्य से उन्होंने कोई प्रकाश तो प्राप्त नहीं किया और केवल यह भाग मिला है कि उस से उनके शरीर जल रहे हैं और ऊपर की खाल काली हो गई है। इस क़ौम से अभिप्राय मुसलमान हैं जो सूर्य के सामने तो हैं परन्तु जलने के अतिरिक्त उन्होंने सूर्य से कोई वास्तविक प्रकाश प्राप्त नहीं किया। अर्थात् वे सच्ची धार्मिक सुन्दरता, सच्चे शिष्टाचार खो बैठे और पक्षपात, वैर, उत्तेजित प्रकृति और दरिन्दगी के आचरण उनके भाग में आ गए। सारांश यह है कि अल्लाह तआला इस तौर पर फ़रमाता है कि ऐसे समय में मसीह मौऊद जो ज़ुलकरनैन है आएगा जबकि ईसाई अंधकार में होंगे और उन के हिस्से में केवल एक बदबूदार कीचड़ होगा जिसे अरबी में حَمَاً कहते हैं और

मुसलमानों के हाथ में केवल एक ख़ुश्क तौहीद (एकेश्वरवाद) होगी। जो पक्षपात और दरिन्दगी की धूप से जले हुए होंगे और कोई रूहानियत साफ़ नहीं होगी। और फिर मसीह जो ज़ुलक़रनैन है एक तीसरी क़ौम को पाएंगे जो याजूज और माजूज के हाथ से बहुत परेशान होगी और वे लोग बहुत धार्मिक होंगे और उनकी तबीयतें नेक होंगी और वे ज़ुलक़रनैन से जो मसीह मौऊद है मदद मांगेंगे ताकि याजूज-माजूज के आक्रमणों से बच जाएं और वह उनके लिए प्रकाशमान रोक बना देगा। अर्थात् इस्लाम के समर्थन में ऐसे ठोस तर्कों की शिक्षा देगा, याजूज-माजूज के आक्रमणों को निश्चित तौर पर रोक देगा और उनके आंसू पोंछेगा और हर प्रकार से उनकी सहायता करेगा तथा उनके साथ होगा। यह उन लोगों की ओर संकेत है जो मुझे स्वीकार करते हैं। यह महान भविष्यवाणी है और इसमें स्पष्ट तौर पर मेरे प्रकटन तथा मेरे समय और मेरी जमाअत की सूचना दी गई है। अत: मुबारक वह जो इन भविष्यवाणियों को ध्यानपूर्वक पढ़े। पवित्र क़ुर्आन की यह सुन्नत है कि इस प्रकार की भविष्यवाणियां भी किया करता है कि चर्चा किसी और की होती है और असल उद्देश्य किसी भविष्यकाल के लिए कोई भविष्यवाणी होती है। जैसा कि सूरह यूसुफ़ में भी इसी प्रकार की भविष्यवाणी की गई है। अर्थात् प्रत्यक्ष तौर पर तो एक क़िस्सा वर्णन किया गया है परन्तु उसमें यह गुप्त भविष्यवाणी है कि जिस प्रकार यूसुफ़ को सर्वप्रथम भाइयों ने तिरस्कार की दृष्टि से देखा परन्तु अन्त में वही यूसुफ़ उन का सरदार बनाया गया। यहां भी क़ुरैश के लिए ऐसा ही होगा। अत: ऐसा ही इन लोगों ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को अस्वीकार करके मक्का से निकाल दिया परन्तु वही जो अस्वीकार किया गया उनका पेशवा और सरदार बनाया गया।

बड़े आश्चर्य का स्थान है कि पवित्र क़ुर्आन में बार-बार मसीह मौऊद अर्थात् इस ख़ाकसार के बारे में इतनी भविष्यवाणियां वर्णन की गई हैं परन्तु फिर कुछ ऐसे लोग जो अपने अन्दर प्रतिभा की रूह नहीं रखते कहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन में मसीह मौऊद का कोई ज़िक्र नहीं। ये लोग उन ईसाइयों के समान है जो अब तक कहते हैं कि ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में बाइबल में कोई भविष्यवाणी नहीं।

چشم باز و گوش باز و ایں ذکا
خیرہ ام از چشم بندئ خدا
ایں کمان از تیرہا ُپر ساختہ
صید نزدیک است دور انداختہ

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

★ ★ ★